आज़ादी का अमृत महोत्सव

जुलाई–दिसम्बर (2021)

बैंक ज्योति

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर

छमाही पत्रिका

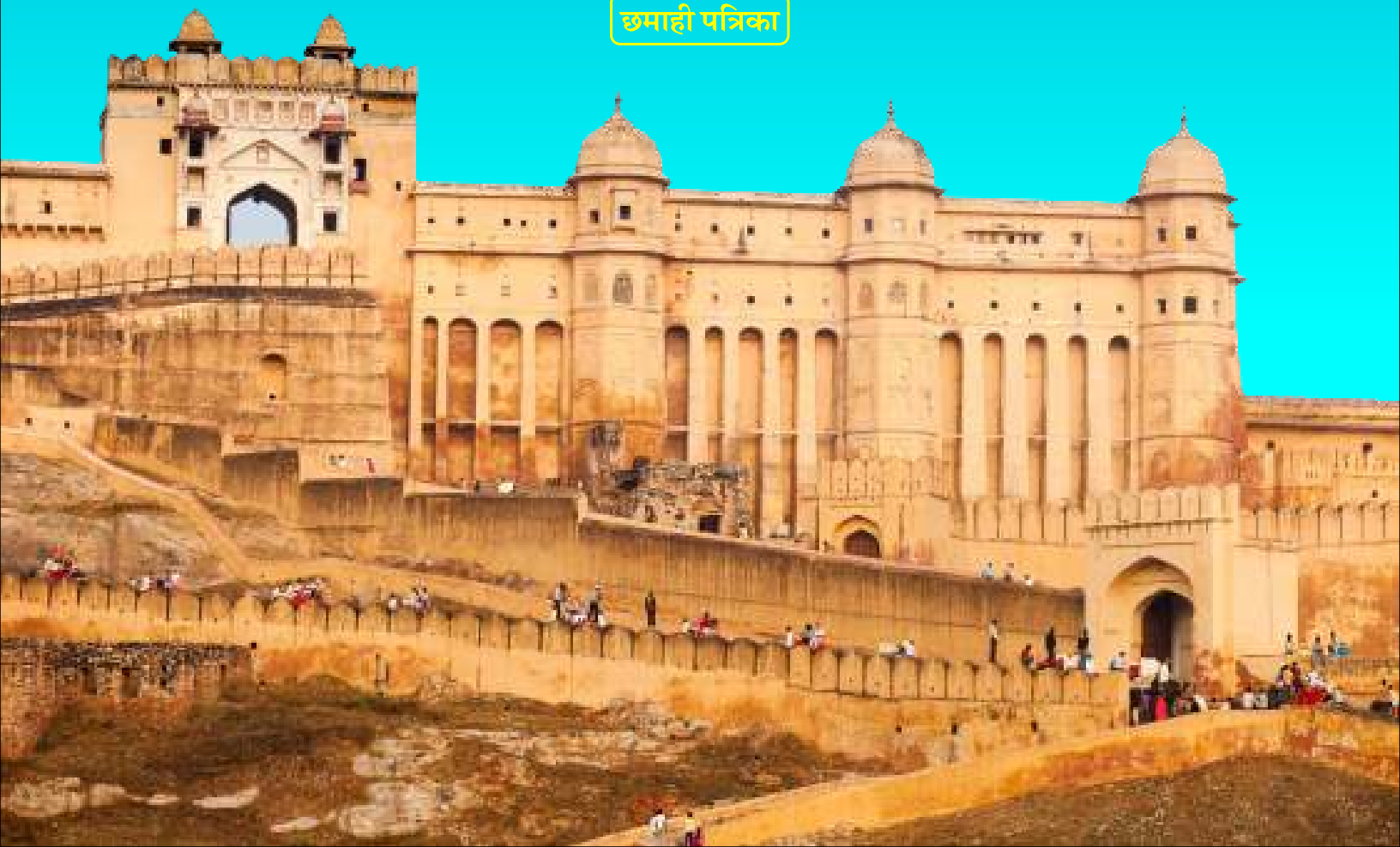

बैंक नराकास, जयपुर को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग का प्रथम पुरस्कार

दिनांक 27–11–2021 को कानपुर में गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, उत्तर क्षेत्र द्वारा आयोजित राजभाषा सम्मेलन में वर्ष 2018–19 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्य निष्पादन के लिए बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति जयपुर को प्रथम पुरस्कार केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री श्री नित्यानंद राय व श्री अजय मिश्र के करकमलों से बैंक ऑफ बड़ौदा जयपुर अंचल के उप महाप्रबंधक नेटवर्क श्री बी एल मीणा को प्रदान किया गया ।

बैंक नराकास जयपुर की 72 वीं अर्द्धवार्षिक समीक्षा बैठक

दिनांक 26.08.2021 को बैंक नराकास जयपुर की 72 वीं अर्द्ध वार्षिक समीक्षा बैठक महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष श्री एम एस महनोत की अध्यक्षता एवं श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, उत्तर क्षेत्र के विशेष आतिथ्य में सम्पन्न हुई । बैठक में सभी सदस्य बैंकों के कार्यालय प्रमुख, वरिष्ठ कार्यपालक व राजभाषा अधिकारीगण उपस्थित रहे। बैठक के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी विभिन्न मुद्दों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई। इस अवसर पर श्री सुधीर घोंगे, उप महाप्रबंधक, भारतीय रिज़र्व बैंक, जयपुर, श्री संजय सिंह, प्रमुख राजभाषा एवं संसदीय समिति विभाग, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा व समिति के उपाध्यक्ष श्री आर सी यादव ने अपने विचार व्यक्त किए ।

बैंक नराकास, जयपुर की छमाही पत्रिका

बैंक ज्योति

जुलाई-दिसम्बर (2021)

अध्यक्ष
महेन्द्र सिंह महनोत
अध्यक्ष, बैंक नराकास, जयपुर एवं
महाप्रबंधक, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, जयपुर अंचल

अध्यक्ष, प्रकाशन उप समिति
संतोष कुमार बंसल
उप महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख
बैंक ऑफ़ बडौदा, जयपुर क्षेत्र

सदस्य सचिव
सोमेन्द्र यादव
सदस्य सचिव, बैंक नराकास, जयपुर एवं
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
बैंक ऑफ़ बड़ौदा, जयपुर अंचल

संयोजक, प्रकाशन उप समिति
जयपाल सिंह शेखावत
वरि. प्रबंधक (राजभाषा)
बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षे.का. जयपुर

संपादन सहयोग
सुधीर कुमार साहु
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
यूकों बैंक, अंचल कार्यालय, जयपुर

प्रेम कुमार गौड़
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

ललित कुमार जांगिड़
प्रबंधक (राजभाषा)
केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, जयपुर

अर्चना पुरोहित
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
इंडियन बैंक, अंचल कार्यालय, जयपुर

संपर्क :
बैंक ऑफ बड़ौदा
समिति सचिवालय, अंचल कार्यालय, बड़ौदा भवन,
13, एयरपोर्ट प्लाजा, टाअक रोड, जयपुर
दूरभाष : 0141-2727130
ईमेल : banktolicjaipur@gmail.com
www.banktolicjaipur.com

इस अंक में

मुख्य पृष्ठ		पृष्ठ संख्या
1.	आंतरिक कवर	–
2.	अनुक्रमणिका	–
3.	कार्यपालकों के संदेश	01
4.	कहानी घड़ी	02–05
5.	सदस्य बैंकों की गतिविधियाँ	06
6.	आलेख : ई.टी.एफ. निवेश	09–16
7.	कवि कल्लोल	14
8.	काव्य सरिता	15
9.	सदस्य बैंकों की गतिविधियाँ	16
10.	पधारो म्हारे देश	17–19
11.	बैकिंग विषयक आलेख	20–21
12.	सदस्य बैकों की गतिविधियाँ	22–23
13.	हिन्दी का सरलीकरण क्यूँ	24–26
14.	क्षणिकाएँ	27–28
15.	आलेख – ग्रामीण कृषि विकास	29
16.	सम – सामयिक आलेख एन.पी.ए.	30–31
17.	अभिप्रेरणा – जीवन प्रबंधन	32–33
18.	सदस्य बैकों के संपर्क विवरण	34–35
19.	आंतरिक कवर : बैंक नराकास जयपुर की उपसमितियों की बैठक	36

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त लेखकों के विचारों से समिति का सहमत होना जरूरी नहीं है ।

श्री सोमेन्द्र यादव, सदस्य सचिव, बैंक नराकास एवं मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), बैंक ऑफ़ बड़ौदा द्वारा प्रकाशित एवं राजस्थान कलर स्कैनर, जयपुर द्वारा मुद्रित (केवल आंतरिक परिचालन हेतु)

अध्यक्ष की कलम से ...

प्रिय साथियों,

नमस्कार,

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर की पत्रिका "बैंक ज्योति" के माध्यम से आप सभी से संवाद करना सदैव प्रसन्नता देता है । यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि विगत छमाही में सम्पूर्ण विश्व में कोविड का प्रकोप कम रहा फलस्वरूप हम सब पहले की तरह अपने दैनिक कामकाज में गतिमान रहे । जैसा कि विगत छमाही में निर्णय लिया गया था कि समिति में अधिकतम गतिविधियों का आयोजन किया जाए । मुझे खुशी है कि हमारी समिति के संयुक्त मंच से विगत छमाही के दौरान रिकॉर्ड 25 से अधिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। निश्चय ही इस उपलब्धि हेतु हमारी समिति के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। जब हम इन गतिविधियों को दृष्टिगत करते हैं तो हमें कार्यक्रमों में विविधता स्पष्ट परिलक्षित होती है जैसे विभिन्न नवोन्मेषी प्रतियोगिताओं का आयोजन, शैक्षणिक संस्थाओं में प्रतियोगिताओं का आयोजन एवं प्रोत्साहन, राजभाषा के अतिरिक्त विभिन्न बैंकिंग एवं व्यक्तित्व विकास से संबन्धित विषयों पर संगोष्ठियों/ वेबिनार का आयोजन एवं हाल ही में 'नई सोच–नई उड़ान' विषयक कार्यक्रम जिसमें सभी सदस्य कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों से नवोन्मेषी सुझावों पर विचार विमर्श किए गए तथा विश्व हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य पर समिति सचिवालय द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन,जिसमें अंतर राष्ट्रीय स्तर के दो प्रसिद्ध हिन्दी विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए।

अपने लक्ष्य व कार्य के प्रति इस तरह की प्रतिबद्धता सिद्ध करती है कि हमारे प्रयास पूर्ण मनोयोग से किए जा रहे हैं । हालांकि पुरस्कार किसी कार्य की श्रेष्ठता का प्रमाण नहीं होता फ़िर भी यह हमारे उत्साह में अभिवृद्धि अवश्य करता है। इसी कड़ी में मुझे यह साझा करते हुए अत्यंत गर्व है कि विगत छःमाही के दौरान बैंक नराकास जयपुर को वर्ष 2018–19 के दौरान उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ तथा बैंक ऑफ़ बड़ौदा प्रधान कार्यालय द्वारा बैंक ऑफ़ बड़ौदा के समन्वयन में संचालित देश के सभी नराकासों के लिए जुलाई माह से शुरू किए गए रेटिंग एवं रैंकिंग प्रणाली में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,जयपुर अब तक अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम स्थान पर विराजित है। इन सभी उपलब्धियों हेतु समिति के सभी सदस्य कार्यालय सहित प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से जुड़े सभी साथियों को बधाई एवं शुभकामनाएँ। कृपया राजभाषा हिन्दी व बैंक नराकास जयपुर के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु सतत प्रयत्नशील रहें ।

मेरा अनुरोध है कि अपने लक्ष्य के प्रति लगातार गतिमान रहने व प्रति शत प्रतिशत निष्ठावान रहने हेतु देश के सच्चे सपूत भगत सिंह की इस उक्ति कि **"जब इंसान अपने काम के औचित्य को लेकर सुनिश्चित होता है तभी वह कुछ कर सकता है"** को अपने व्यक्तिगत व व्यावसायिक जीवन में अवश्य उतारें और सफलता का आलिंगन करें ।
नववर्ष व आगामी समय आप सभी के जीवन में सुख, समृद्धि,सफलता व शांति लेकर आए ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(महेन्द्र सिंह महनोत)
महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष
बैंक नराकास, जयपुर

उपाध्यक्ष की कलम से ...

प्रिय पाठकों,

आप सभी को मेरा नमस्कार,

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,जयपुर की पत्रिका "बैंक ज्योति" के माध्यम से आप सभी से अपने विचार व्यक्त करने में मुझे अति प्रसन्नता हो रही है। हम जानते हैं कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एक ऐसा मंच होता है जहाँ नगर के सभी सदस्य कार्यालय संयुक्त रूप से राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए योजना बद्ध तरीके से कार्य करते हैं। मुझे यह बतलाते हुए अत्यंत प्रसन्नता है कि बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति जयपुर अपने इस मकसद पर शत–प्रतिशत खरा उतरने के लिए सदा प्रयत्नशील है, जो कि विगत छः माही के दौरान समिति के मंच से लिए गए निर्णयों एवं सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा विविध प्रतियोगिताओं /आयोजनों व लगातार समय समय पर समिति को प्राप्त पुरस्कार व सम्मानों से स्पष्ट परिलक्षित होता है।

विगत छः माही बैठक में लिए गए निर्णयों के अनुरूप शत–प्रतिशत कार्रवाई कर हमने राजभाषा के उन्नयन में सार्थक कदम उठाएँ हैं । मेरा अनुरोध है कि भविष्य में भी सभी सदस्य अपने कार्य दायित्वों का शत–प्रतिशत निर्वहन कर अपनी इस समिति को और भी ऊचाइयों पर लेकर जाएँ ।

बेहतर कार्य करने के लिए संभावनाएं अनंत हैं, इस बात को ध्यान में रखकर आइए हम सब अपनी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति जयपुर को अग्रणी स्थान में विराजित रखने हेतु आदर्श कार्ययोजना बनाएँ और यथासमय उसे पूर्ण करने हेतु पूर्ण मनोयोग एवं परस्पर समन्वयन के साथ जुट जाएँ। बदलते परिवेश के अनुरूप कार्यक्रम, प्रतियोगिताओं, संगोष्ठियों, बैंकिंग विषयक वेबिनारों के आयोजन से न केवल हम राजभाषाई लक्ष्यों की प्राप्ति कर सकेंगे बल्कि अधिकतम स्टाफ़ सदस्यों को हिन्दी की इस विकास यात्रा में शामिल कर सकेंगे ।

प्रसिद्ध विचारक व लेखक आर्थर ऐश ने बिल्कुल ठीक कहा है कि **"आप जहां हैं, वहीं से शुरुआत करें, आपके पास जो है, उसका शत प्रतिशत उपयोग करें, आप वह सब करें जो आप कर सकते हैं।''**

आइए, हम सब इस पंक्ति के अनुरूप बैंक नराकास जयपुर की प्रगति हेतु अपना शत–प्रतिशत योगदान दें ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

आर सी यादव,
उप महाप्रबंधक व उपाध्यक्ष
बैंक नराकास ,जयपुर

अध्यक्ष प्रकाशन उप-समिति का संदेश ...

नमस्कार साथियो,

नवोन्मेषिता; कहने को तो ये महज़ एक शब्द है, मगर अपने भावार्थ में यह संभावनाओं का एक अथाह समुद्र समेटे हुए है। जितना आप इस समुद्र में उतरते जाएंगे, उतने ही सफलता रूपी कीमती मोती आप बीनते जायेंगे। दुनिया की अग्रणी स्मार्टफोन निर्माता कंपनी एप्पल के पूर्व सीईओ स्टीव जॉब्स भी कहते हैं, **"जीतने का केवल एक ही तरीका है, कुछ नया कीजिए"।** इस दिशा में बैंक नराकास, जयपुर की पहचान हमेशा एक लीडर की रही है और अब समिति की गृह पत्रिका "बैंक ज्योति" के माध्यम से भी हम नवोन्मेषिता के नए आयाम गढ़ रहे हैं।

आप सभी इस बात से सहमत होंगे कि समिति द्वारा प्रकाशन उप समिति गठित किए जाने के कुछ निहितार्थ रहे हैं। इसमें सबसे अहम है पत्रिका की संदर्भ सामग्री को स्तरीय बनाना ताकि हम अपनी समिति के लिए गृह मंत्रालय से पुरस्कार पाने का दावा कर सकें और इसके लिए सदस्य कार्यालयों की राजभाषाई टीम का योगदान बेहद जरूरी हो जाता है। मेरी सभी राजभाषा प्रभारियों से अपील है कि कृपया पत्रिका हेतु आलेख, कविता प्रेषित करते समय अपने स्तर पर यह सुनिश्चित करें कि क्या प्रेषित संदर्भ सामग्री स्तरीय है ? विषय चाहे जो भी हो, एक छमाही में एक स्तरीय मौलिक आलेख तो हम भेज ही सकते हैं।

अंक दर अंक पत्रिका को और बेहतर बनाने के संकल्प के साथ यह अंक आप सभी को समर्पित है। पत्रिका के इस अंक में हमने तक़रीबन सभी सदस्य कार्यालयों की गतिविधियों एवं स्टाफ सदस्यों की रचनाओं/आलेखों को सम्मिलित करने का प्रयास किया है। बैंकिंग एवं सम-सामयिक विषयों पर आधारित आलेखों और भावपूर्ण कविताओं के माध्यम से इसे संपूर्णता प्रदान करने का प्रयास किया गया है।

मैं प्रकाशन उप समिति के हमारे सहयोगी कार्यालय यूको बैंक, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, इंडियन बैंक, केनरा बैंक और नाबार्ड के कार्यपालकों एवं राजभाषा प्रभारियों को भी उनके प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग हेतु धन्यवाद देता हूँ। मेरा विश्वास है कि आगे भी हमारे सभी सहयोगी कार्यालयों का सहयोग हमें इसी प्रकार मिलता रहेगा।

शुभकामनाओं सहित,

(संतोष कुमार बंसल)
उप महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख,
बैंक ऑफ बड़ौदा, जयपुर क्षेत्र

सदस्य सचिव के शब्द ...

प्रिय सुधी पाठकों,

बैंक नराकास, जयपुर की गृह पत्रिका 'बैंक ज्योति' बैंकिंग की दैनिक दिनचर्या के बीच हमें कुछ स्तरीय पठन–सामग्री उपलब्ध करवाती है। इसके जरिए हम छमाही के दौरान सम्पन्न समिति की गतिविधियों से भी रूबरू होते हैं। इसके एक और अंक के माध्यम से आपसे संवाद स्थापित करने का अवसर मिल रहा है।

कोरोना के कारण हमारी अधिकांश प्रतियोगिताएं और बैठकें ऑनलाइन ही हो रही हैं। किन्तु, यह समय की मांग भी है कि मोड चाहे हो भी हो, हम एक साथ मिलकर समिति की गतिविधियों को निर्बाध रूप से जारी रखें और हम काफी हद तक इसमें सफल भी हुए हैं। मैं आगामी कलेंडर वर्ष के दौरान भी समिति के सदस्य कार्यालयों से इसी प्रकार के सहयोग की कामना करता हूँ।

बैंक ज्योति का यह अंक आप सभी को समर्पित है। पत्रिका के इस अंक में हमने विभिन्न बैंकिंग संबंधी आलेख, सम–सामयिक एवं अन्य स्तरीय आलेखों को स्थान दिया है। इसके अतिरिक्त, सदस्य कार्यालयों की राजभाषा संबंधी गतिविधियों के साथ विभिन्न प्रतियोगिताओं की पुरस्कृत रचनाओं को भी सम्मिलित किया गया है। मेरा विभिन्न कार्यालयों में कार्यरत राजभाषा विभाग के साथियों से, अनुरोध है कि कृपया अपने कार्यालय से ऐसे लोगों का चुनाव करें जो लेखन में दिलचस्पी रखते हों और इनसे समिति की पत्रिका हेतु स्तरीय आलेख, कविता, यात्रा वृतांत प्राप्त कर हमारी प्रकाशन उप समिति को समयानुसार भिजवाने का प्रयास करें।

पत्रिका को और बेहतर बनाने हेतु आपके अमूल्य सुझावों से हमें अवश्य अवगत करवाएँ।

आपका

(सोमेन्द्र यादव)
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
एवं सदस्य सचिव,
बैंक नराकास, जयपुर

घड़ी

सिडबी द्वारा आयोजित 'अधूरी कहानी पूरी करो' प्रतियोगिता के अन्तर्गत पुरस्कृत रचना

अंकुर ने घड़ी देखी , अभी 8.30 बजे थे। यानि पूरे 10 घन्टे का सफर बाकी था। ट्रेन में यात्री सोने की तैयारी कर रहे थे लेकिन अंकुर की आखों से नींद गायब थी । पिछले आधे घंटे में 10 बार घड़ी देख चुका था। समय की गति समान है पर हमारी मनः स्थिति उसको छोटा कर रही थी । अंकुर को जब से अपनी मां के बीमार होने की सूचना मिली थी तभी से उसका मन बैचेन हो गया । मॉ सभी के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है । अंकुर का बैचैन होना स्वाभाविक था क्योंकि जब से वह घर से बाहर रहने लगा है तब से मां की याद ज्यादा आने लगी थी। वह 06 माह बाद घर जा रहा था, वह भी तब जब उसको माँ के बीमार होने खबर मिली थी । अंकुर 25 वर्ष का नवयुवक था। जो अविवाहित था और वह बैंगलौर शहर में आई.टी. कम्पनी में जॉब करता था जबकि वह लखनऊ का रहने वाला था। अंकुर एक मेहनती और ईमानदार कर्मचारी था। उसके काम करने के तरीके और मेहनत से उसका प्रबंधक बहुत खुश था और उस पर विश्वास भी करने लगा था। उधर डिब्बे में आयी तेज आवाज ने अंकुर का ध्यान भंग किया क्योंकि अंकुर ट्रेन के स्लीपर कोच में सफर कर रहा था। जिसमें और भी कई यात्री और उनकी फैमली भी सफर कर रही थी। तभी उसका ध्यान तेज आवाज की ओर गया जिसमें दूसरी बर्थ में एक बेटा अपनी मॉ से झगड़ रहा था । उसी दरमियान उसकी आवाज ऊँची हो गयी । उस यात्री की माँ रो रही थी। झगड़ा करते हुए वह लड़का ट्रेन की गैलरी में आ गया और अंकुर के सामने वाली सीट जो यात्री नही होने के कारण खाली थी उस पर बैठ गया। कुछ क्षणों के पश्चात् उसके पास एक युवती भी आकर बैठ गई। जो हाव भाव से उस युवक की पत्नी लग रही थी। वह औरत उस युवक से कुछ बोली "तुम अगर सोचते हो कि यहां आकर तुम आराम से जाओगे तो यह गलत है। तुम्हें यह फैसला करना होगा कि शहर में हमारे साथ कौन रहेगा? मैं या तुम्हारी माँ ?" लड़का पीठ फेर लेता है। कुछ बोलता नहीं है। "मुंह क्यों फेर लिया? बोलते क्यों नहीं? एक कमरे के मकान में तुम्हारे और तुम्हारी माँ के साथ नहीं रह सकती"

''तो तुम गांव क्यों नहीं रह लेती?''

''तुमने क्या मुझसे शादी इसलिए की कि तुम मुझे गांव में अकेले छोड़ोगें?''

"अकेली कहाँ रहोगी? मैं तो चाह रहा था कि तुम मां के साथ गांव में ही रहती और मैं समय–समय पर आकर तुम लोगों की खैर मालूम कर लेता। पिताजी की मृत्यु के बाद माई का कौन है गाँव में?मुझे तो शहर में कमाने के लिए जाना ही था अगर नहीं जाऊं तो खाएंगे क्या?

"वह मैं नहीं जानती। यह तुम्हारी चिंता है। मैं तो शहर में रहूंगी। गांव की बंदिशों के बीच मुझसे नहीं रहा जाता।"

"देख बेटा अब मेरी बुड्ढी हड्डियों में जान नहीं बची है। अब तू ही बता मेरा पेट भरने वाला कौन है?" लकड़ी टेकती और डिब्बे की सीट पकड़ती उस युवक की मां भी उसके पास आ कर रोती हुई फर्श पर बैठ गई।

"तब मैं क्या करूं? समझ में नहीं आ रहा है। यह कहती है कि तुम्हारे साथ नहीं रहेगी और तुम मेरे पीछे पड़ी हुई हो। आखिर गांव में क्या तकलीफ थी, जो मेरी जिंदगी बिगाड़ने के लिए शहर चल रही हो?"

"गांव में भीख मांग कर खाते हुए मुझे बहुत दिन हो गए हैं, अब शर्म आती है बेटा।"

अंकुर इस स्थिति के लिए तैयार नहीं था। वह मां बेटे की इस झगड़े से विचलित होकर ट्रेन के गेट के पास आकर खड़ा हो गया और स्त्री पुरुष संबंधों के साथ–साथ पारिवारिक संबंधों को चुनौतियों के बीच कैसे निभाया जा सके, इस पर चिंतन करने लगा। वे दोनों माँ–बेटे और वह औरत अभी भी झगड़ रहे थे, पर अंकुर का ध्यान अब उस ओर इतना नहीं था। वह खुद इस झगड़े को देखकर परेशान हो उठा क्योंकि घर जाकर माँ से खुद के द्वारा देखी गई लड़की से विवाह की बात भी करना चाहता था। वह अपनी कम्पनी में काम करने वाले ठेकेदार की लड़की संगीता से प्रेम कर रहा था। ट्रेन में बैठते वक्त संगीता ने उसे कहा भी था कि मां से बात करना और बातों ही बातों में वह कह रही थी कि गांव की जिंदगी बहुत धीमी होती है इसलिए मां को भी शादी के बाद बैंगलौर ही ले आना। मां की बीमारी और रेल के डिब्बे में हो रहे इस झगड़े के बीच अंकुर अपने प्रेम के चिंतन को कैसे घसीट लाया वह खुद नहीं समझ पा रहा था। बैंगलौर में उसके पास रोजगार भी है, आगे की पढ़ाई भी कर सकता है और प्रेमिका भी है। वहीं दूसरी ओर गांव में बेरोजगारी के साथ–साथ बीमार माँ है। चयन की पीड़ा के बीच वह भी उस युवक के समान बेचैन होने लगा। डिब्बे में कुछ शांति हुई तो अंकुर वापस अपनी बर्थ पर जाकर बैठा। बेटा कह रहा था कि माँ मैं शहर में कोई और जगह ढूंढ लूंगा, जहां पर हम साथ रहेंगे। वह बुढ़िया खुश होकर वापस अपनी सीट पर लौट गई। जब बेटा माँ से यह वाक्य कह रहा था तब वह अपनी आंखों से पत्नी को इशारों–इशारों में कुछ कह रहा था। उसके इशारे को समझते हुए वह चुप रही। बुढ़िया के जाते ही वह पति के पास जा कर बैठी और उसने पूछा कि तुम्हारा प्लान क्या है? वह उसके कान में बोला,"छुटकारा" छुटकारा? मगर किससे और कैसे? "माँ से छुटकारा "आगे की पंक्तियां अंकुर नहीं सुन पाया वह युवक लगातार उसकी पत्नी के कान में कुछ कहता जा रहा था। दूसरी तरफ अंकुर की आंखों में अंधेरा छाता जा रहा था। वह समझ नहीं पा रहा था कि कहीं ऐसी ही स्थिति उसके साथ हुई तो वह क्या करेगा? कुछ समय पश्चात वह दंपति उस बुढ़िया के पास जाकर बैठ गई। अंकुर अपनी सीट से देख रहा था कि अब माँ बेटे और बहू के बीच बेहतर संवाद हो रहा था। थोड़ी देर बाद वह बूढ़ी औरत उठ कर बाथरूम की ओर चली गई। उसके साथ उसका बेटा भी सहारा देने के लिए साथ हो लिया। अंकुर ने घड़ी देखी तो अब 9:30 बज चुके थे यानी ट्रेन भोपाल क्रॉस करके दिल्ली की तरफ बढ़ रही थी। तभी एक आवाज सुनाई दी । "अरे बचाओ रे!" इस मर्म भेदी आवाज ने डिब्बे के सभी लोगों को जगा दिया। "हाय रे! मेरी मां गिर गई, अरे कोई चैन खींचो रे। हाय रे मेरी माँ गिर गई, बचाओं।

" अंकुर ने इस आवाज को पहचान लिया यह आवाज अभी झगड़ रहे युवक की ही थी। अंकुर और अन्य यात्री दौड़कर गेट के पास गए तो वह युवक ट्रेन के दरवाजे के पास दहाड़े मार–मार कर रो रहा था। एक यात्री ने लपक कर ट्रेन की चेन खींची। ट्रेन कुछ दूर तक चल कर रुक गई। रात के अंधेरे में भी ट्रेन के कई यात्री नीचे उतर गए उस बुढ़िया की खोज में निकल पड़े पर उनको ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ी क्योंकि बुढ़िया कुछ ही दूर एक चट्टान के पास पड़ी हुई थी जब यात्री और पास में गए तो पता चला कि वह मर गई। हतप्रभ हुई उस युवक की पत्नी रोती हुई उसकी सास की लाश के पास पहुंची। युवक लाश के पास बैठा लगातार रोए जा रहा था। अंकुर के डिब्बे के एक सहयात्री जो उस मां बेटे की आवाजें सुन रहा था उसके मुंह से अचानक निकला, "चलो बुढ़िया को, "छुटकारा मिला"। अंकुर ने देखा कि यह वाक्य सुनकर युवक की पत्नी को रोनी सूरत के बीच होठों पर हंसी नाच रही थी जबकि युवक का रोना और तेज होता जा रहा था। अंकुर ऐसी स्थिति में भी हंसता हुआ अपनी सीट पर जाकर बैठ गया और अपने हाथों से मुंह ढंक कर बैठ गया। उसने मन ही मन अपनी प्रेमिका संगीता से छुटकारा पाने का फैसला कर लिया और अपनी बर्थ पर जाकर लेट गया । थोड़ी देर बाद दुबारा ट्रेन चलने लगी । कब अंकुर को नींद आ गयी पता ही नहीं चला। आंख जब उसकी तब खुली तब ट्रेन सुबह 9.30 बजे दिल्ली के निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर खड़ी हो गयी और यात्रियों का शोरगुल ट्रेन से उतरने लगा। उसके बाद वह घर की ओर चल दिया ।

पेमा राम नोगिया
अधिकारी
केनरा बैंक

समय कछुआ समय खरगोश

सिडबी द्वारा आयोजित 'अधूरी कहानी पूरी करो' प्रतियोगिता के अन्तर्गत पुरस्कृत रचना

अंकुर ने घड़ी देखी, अभी 8.30 ही बजे यानि पूरे दस घंटे का सफर बाकी है। ट्रेन में यात्री सोने की तैयारी कर रहे थे, लेकिन अंकुर की आँखों से नींद गायब थी ।

अंकुर प्रतिदिन की तरह हँसी खुशी ऑफिस का काम समेट कर निकलने की तैयारी में था कि नागपुर से छोटे भाई अंकित के फोन ने उसके होश उडा दिए।

"भाई, पिया कहीं नहीं मिल रही। शाम को पार्क मे खेलने गयी थी, पता नहीं कहाँ गयी । आप जल्दी आ जाओ ।" अंकुर के पैरों तले जमीन खिसक गयी, हाथ पैर काँप गए, दिमाग सुन्न हो गया। पिया मेरी छोटी सी, मासूम सी पांच साल की नन्हीं सी बिटिया, कहाँ गयी ! कैसे खो गयी ! क्या करूँ मै ! कहाँ से लाऊं तुझे !"अंकुर धीरज खो कर रो पड़ा । भला हो उसके सहकर्मियों का उन्होंने उसे संभाला और समझा–बुझा कर, टिकिट कटा कर ट्रेन मे बिठा गये । कोई फ्लाईट होती तो उड़ कर पहुँचता पर अब तो ऐसे ही जाना था ।

कितना हँसता खेलता छोटा सा परिवार था उसका वो, उसकी पत्नी अनुराधा और दोनों की लाडली बिटिया अनुप्रिया यानि पिया । ना जाने किसकी नजर लग गयी, कोरोना ने मेरी अनुराधा को मुझसे छीन लिया । कोरोना के कारण अंकुर ना तो बीमारी में उसके साथ रह पाया ना मृत्यु के बाद उसका साथ दे पाया । घर की रानी को घर लाये बिना ही अलविदा कहना पड़ा । मजबूरी इंसान से क्या कुछ नहीं करा लेती, जिस गोलमटोल गदबदी सी पिया जिसे देखे बिना उसकी सुबह नहीं होती थी, जिसे लाड़ लड़ाये बिना शाम और थपकी देकर कंधे पर सुलाये बिना उसकी रात नहीं होती थी उसी पिया को माँ पापा और भाई के पास नागपुर छोड़ना पड़ा। अभी तीन महीने ही तो हुऐ थे पिया को वहाँ छोड़े हुऐ "हाय! ये क्या हो गया अनुराधा की जुदाई के बाद पिया को देख–देख कर ही जी रहा था वो, अब ....अब ... अंकुर सच में ही रो पड़ा ।

कहाँ होगी पिया ! किस हाल मे होगी वो ! बादलों से निकली निर्मल बूंद सी पिया कहीं गलत हांथों में न पड गयी हो। हे भगवान उसे सुरक्षित लौटा देना। पता नहीं कहाँ भूखी प्यासी रो रही होगी। रास्ता भूल कर भटक रही होगी। नाम, पता और फोन नंबर तो उसे रटा रखा है पर घबराहट में भूल न जाऐ । हे भगवान, मेरी सारी नेकियों के बदले मुझे मेरी बेटी लौटा दो मुझे और कुछ नहीं चाहिए " अंकुर मन ही मन प्रार्थना कर रहा था और रो रहा था – रो रो कर फिर प्रार्थना कर रहा था ।

"मेरे पापा सबसे अच्छे ", "नहीं, मेरी पिया सबसे अच्छी" दोनों बाप–बेटी अपनी अपनी बात पर अड़े रहते और अनुराधा हँस पडती " और मैं कहाँ हूँ भई ।" पिया का हँसना– रोना, जिद करना, खेलना, सोना, जगना और मेरे कन्धों पर चढ जाना सब एक मीठा सपना सा लग रहा था ।

"पप्पा मुझे ढूंढों, मैं कहाँ हूँ ! अक्सर वो छुपम–छुपाई मे छुपकर अंकुर को पुकारती और अंकुर भी झूंठ–मूंठ उसे ढूंढने का नाटक करता। अब तो सच में ही ना जाने कहाँ छुप गयी है पिया ! कहाँ जा कर ढूढूँ उसे "अंकुर बिलख पड़ा।

आज जब घर में ही कोई सुरक्षित नहीं है तो पांच साल की नन्हीं सी जान का घर से बाहर क्या हाल हो रहा होगा। है भी तो बहुत खूबसूरत वो, गोल–गोल, गोरा–गोरा मुंह, घुंघराले काले बाल, गोलमोल सी, चंचल–चपल–चटपटी सी राह चलते का ध्यान खींच लेने वाली । पार्क से कहाँ गायब हो गयी !

कैसे –कैसे किस्से तो आये दिन देखने–सुनने मे आते हैं। कल के पेपर में ही था "चार– पांच आवारा कुत्तों ने ली एक छोटे बालक की जान " बच्चों को अपंग करके भीख मंगवाना तो बहुत पुरानी बात हो गयी, अब तो किडनी, लीवर, हार्ट , आँखें शरीर के सारे अंग ही बहुत मंहगे दामों में बिक जाते है और खाली शरीर वैसे ही डिस्पोज कर दिया जाता हैं जैसे बाजार से लाये सामान को निकाल कर डिस्पोजेबल बेग डस्टबिन में डाल दिये जाते है। " हे ईश्वर ऐसे–ऐसे ख्याल क्यूँ मेरे दिमाग में आ रहे है ! ऐसा कुछ ना हो । ऐसा कुछ ना करना भगवान" अंकुर पुकार उठा ।

घडी की सुईयां और ट्रेन दोनों अपनी गति से चल रहीं थीं पर अंकुर के लिए समय ठहरा पड़ा था। समय काटे नहीं कट रहा था। "काश तुम इस समय मेरे साथ होतीं अनु। मैं अकेला कैसे क्या करूँगा" अंकुर ने अनुराधा को याद किया फिर बोल पड़ा " कैसा पागल हूँ मै भी! अगर तुम होतीं तो पिया ददिहाल में होती ही क्यूँ ! खोती ही क्यूँ !

"मत घबराओ, पिया मिल जायेगी । नागपुर क्राइम सिटी नहीं है , उसे कुछ नहीं होगा" अंकुर का एक मन उसे समझाता तो दूसरा मन तुरंत ही उसे दहला देता " क्राइम कहाँ नहीं है भई और कोरोना काल में तो धंधा पानी चौपट होने से क्राइम अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच रहा है। अपना और अपने घरवालों का पेट भरने के लिए हर कोई, जो कुछ कर पाये कर गुजरने के लिए तैयार रहता है और करने के बाद पछताता भी नहीं है अपने आप को सही मानता है, क्योंकि जीने का अधिकार तो सबको है ना ।

ऐसे माहौल मे पिया का खो जाना बिल्कुल भी सुरक्षित नहीं है । गलत हाथों मे पड़ी पिया क्या करेगी ! कैसे सहेगी ! इससे तो अच्छा होता तुम उसे भी साथ ही ले जाती अनु । मौत से उपजा शोक फिर भी सहन किया जा सकता है, पर अचानक से अपने कलेजे के टुकड़े के खो जाने का दर्द और और उस पर संभावित अमानुषिक यातनाओं की कल्पनाओं का दंश असहनीय है। मैं नहीं सह सकता , मै नहीं सह पाउँगा, अंकुर फूट पड़ा ।

निर्भया–कांड, निठारी–कांड, अंग–तस्करी, बालश्रम, बाल भिक्षावृत्ति, देह व्यापार, मंडी, कोठे और विदेशों मे बेची जाती लडकियों के ना जाने कितने कितने और कैसे–कैसे पढ़े सुने किस्से सुरसा के मुख की तरह मेरी चेतना

को निगले जा रहे थे। पुलिस उसे ढूँढ लेगी या कोई भलामानस उसे घर लौटा जायेगा – ऐसे विचार तो क्षणिक बुलबुले से बनते और बिगड़ रहे थे। अच्छे विचारों से मन संभल भी ना पाता कि बुरे विचार फिर उसे दहला देते। "पकड़ो ना जरा इसे," अनु पिया को पकड़ा रही थी। "लाओ " कह कर अंकुर ने हाथ फैलाया पर हाथ फैला ही रह गया । न वहाँ अनु थी न पियाः शायद अंकुर सो गया था। सपने मे उसे पिया मिल गयी थी। सुना है सुबह का सपना सच होता है मतलब पिया मुझे मिल जायेगी अंकुर के मन मे एक आस जागी ।

आखिर नागपुर आ गया। वो कूद कर ट्रेन से उतरा और घर के लिए कैब कर ली मोबाईल स्विच आफ होने के कारण लेटेस्ट कोई खबर उसके पास नहीं थी । डूबते उतरते दिल के साथ वो घर के लिये रवाना हुआ ।

उसके घर की गली के मोड़ पर ही पुलिस की गाड़ी के पास खड़ा उसका भाई अंकित दौड़कर उसके गले लग गया " भाई, पिया मिल गयी है, इंस्पेक्टर साहब उसे ही लौटाने आये थे।" अंकुर इतनी बड़ी खुशी पाकर फिर रो पड़ा। इंस्पेक्टर साहब को धन्यवाद करने के लिए ना तो उसके पास शब्द थे ना ही समय। वो सरपट घर की ओर भाग छूटा।

अरे ...ये क्या .. कहीं ये सपना तो नहीं अंकुर का दिल खुशी से सौ–सौ ताल उछल रहा था, उसकी पिया, उसकी लाडो गोल–गोल आँखे घुमाती बालकनी से झाँक रही थी। अंकुर और उसका मन दोनों ईश्वर के आगे नतमस्तक हो गए। अंकुर ने दौड़ कर उसे कलेजे से लगा लिया और लगाये ही रखता अगर पापा उसे ना टोकते " अब उसे छोड़ भी दे बेटा, वो परेशान हो रही है। तूने आधे घंटे से उसे चिपका रखा है ।"

"आधा घंटा! " अरे अभी तो उसने पिया को गोद में उठाया ही था, और आधा घंटा हो गया। सच समय भी क्या खूब शय है कभी कछुए सा रेंगता है तो कभी खरगोश की तरह सरपट दौड़ लगाता है।

मन की चाबी

सजा हुआ घर, अंदर मगर उजास नहीं थी
संगमरमरी मूरत थी पर साँस नहीं थी

घर के बाहर इंसानों के ओहदे देखे
अंदर उनके बात मगर कोई खास नहीं थी

बाहर के लोगों से मिला बहुत अपनापन
घर के लोगों ने दिलजोई खास नहीं की

उसने सुबहो–शाम मेरे ही साथ गुजारे
लेकिन मुझसे बातें कोई खास नहीं कीं

कहने को दिल का रिश्ता था उससे मेरा
लेकिन उसकी धड़कन मेरे पास नहीं थी

जितना ऊँचा रुतबा उतनी दिल से दूरी
घोड़ा अपना था पर उसकी रास नहीं थी

सबके मन के ताले खोल–खोल हम हारे
अपने मन की चाबी मेरे पास नहीं थी

श्रीमती अंजना सक्सेना,
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया,
क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

अनु बिश्नोई
प्रबंधक, यूको बैंक,
महेश नगर शाखा, जयपुर

सदस्य बैंकों की गतिविधियाँ

भारतीय रिज़र्व बैंक

हिंदी दिवस समारोह

जयपुर कार्यालय में हिंदी माह का शुभारंभ क्षेत्रीय निदेशक महोदय द्वारा अपील जारी कर किया जाता है। श्री अरुण कुमार सिंह, क्षेत्रीय निदेशक, राजस्थान द्वारा 16 अगस्त 2021 को स्टाफ–सदस्यों के लिए अपील जारी की गई। 14 सितंबर 2021 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। श्री अरुण कुमार सिंह, क्षेत्रीय निदेशक ने समारोह की अध्यक्षता की। कार्यक्रम के दौरान जयपुर कार्यालय की गृह पत्रिका 'झरोखा' के छठे अंक का विमोचन क्षेत्रीय निदेशक, बैंकिंग लोकपाल महोदया, प्रधान संपादक के हाथों किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवस के उपलक्ष्य में 'अनुवाद प्रतियोगिता' का आयोजन

भारतीय रिज़र्व बैंक, जयपुर द्वारा अंतर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 30 सितम्बर 2021 को 'अनुवाद प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में 30 स्टाफ–सदस्यों ने भाग लिया।

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

कार्यालयीन कार्य में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने और हिंदी में काम करना आसान बनाने के उद्देश्य तथा प्रतिभागियों की संख्या बढ़ाने के लिए जयपुर कार्यालय द्वारा प्रति तिमाही दो हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। दिनांक 07 और 09 सितंबर 2021 को अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए अलग–अलग दो कार्यशालाएँ आयोजित की गई। इसमें 18 कर्मचारी और 15 अधिकारियों ने भाग लिया।

बैंक नराकास, जयपुर के तत्वावधान में ऑनलाइन 'कविता पाठ प्रतियोगिता' का आयोजन

भारतीय रिज़र्व बैंक, जयपुर द्वारा बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर के तत्वावधान में 22 अक्तूबर 2021 को ऑन लाइन हिन्दी कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उक्त प्रतियोगिता में आठ बैंकों ने सहभाग किया। प्रतियोगिता में श्रीमती निशा गुप्ता, यूको बैंक, श्रीमती पूर्णिका शर्मा, पंजाब नैशनल बैंक और श्री सुरेन्द्र प्रसाद शर्मा, इंडियन बैंक को क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त हुए।

सदस्य बैंकों की गतिविधियाँ

नाबार्ड, राजस्थान क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

हिन्दी दिवस समारोह

दिनांक 14 सितम्बर 2021 को राजस्थान क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय कार्यालय के सभी स्टाफ सदस्यों सहित जिला विकास प्रबन्धक भी माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से इस कार्यक्रम से जुड़े। कार्यक्रम के दौरान सभी स्टाफ सदस्यों ने राजभाषा प्रतिज्ञा ली और राजभाषा कार्यान्वयन में अपना शत प्रतिशत योगदान करने का संकल्प लिया। इसके पश्चात हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं और सहभागियों को पुरस्कारों का वितरण किया गया।

नराकास के तत्वावधान में विद्यालय में आशु भाषण प्रतियोगिता

बैंक नराकास, जयपुर के तत्वावधान में दिनांक 25 नवंबर 2021 को नाबार्ड, राजस्थान क्षेत्रीय कार्यालय के द्वारा गांधीनगर उच्च प्राथमिक विद्यालय में कक्षा 6 से 8 के विद्यार्थियों के लिए आशु भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गयी । विद्यालय के प्रधानाचार्य और नाबार्ड उप महाप्रबंधक के द्वारा प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

नराकास के तत्वावधान में ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन

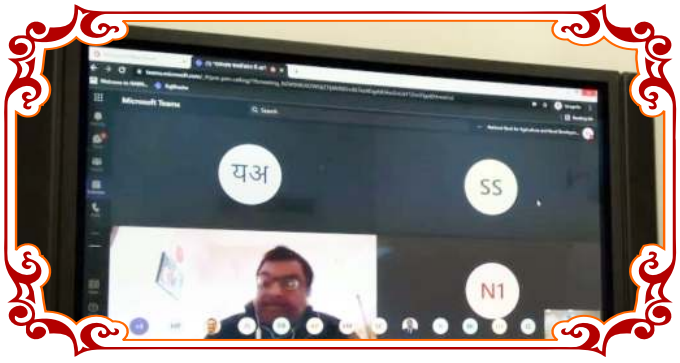

नाबार्ड राजस्थान क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा दिनांक 28 दिसंबर 2021 को बैंक नराकास, जयपुर के तत्वावधान में "राजभाषा कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ और उनका समाधान" विषयक वेबगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. सुनील कुमार पाण्डेय को अतिथि वक्ता के रूप मे आमंत्रित किया गया। अतिथि वक्ता ने राजभाषा कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियों का अपने अनुभवो के आधार पर प्रतिभागियों की समस्याओं के लिए समाधान सुझाए। बैंक नराकास, जयपुर के सदस्यों ने सहभागिता कर इसे सफल बनाया।

सदस्य बैंकों की गतिविधियाँ

बैंक ऑफ बड़ौदा, अंचल कार्यालय, जयपुर

अंचल के राजभाषा अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक का आयोजन

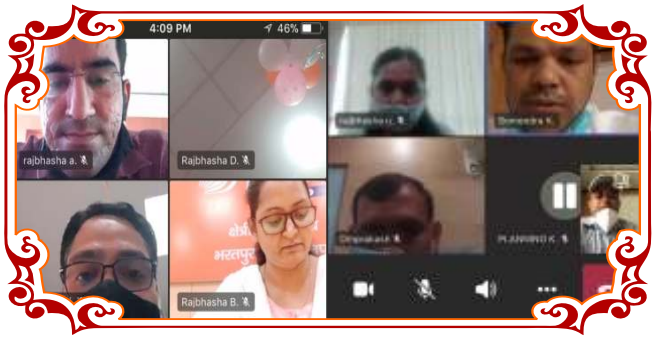

दिनांक 19.07.2021 को अंचल राजभाषा विभाग द्वारा अंचल के सभी राजभाषा अधिकारियों के साथ बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में अंचल कार्यालय द्वारा क्षेत्रीय राजभाषा अधिकारियों द्वारा इस वित्त वर्ष में किए गए कार्यों की समीक्षा की गई ।

जयपुर अंचल कार्यालय एवं बड़ौदा अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 24.08.2021 को अंचल कार्यालय एवं बड़ौदा अकादमी जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में अंचल के राजभाषा प्रेरकों हेतु पूर्ण दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला के दौरान विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई । इस कार्यशाला में कुल 28 अधिकारी / कर्मचारी शामिल रहे ।

जयपुर अंचल एवं क्षेत्र द्वारा हिन्दी दिवस एवं राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन

जयपुर अंचल एवं क्षेत्र द्वारा महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री महेन्द्र सिंह महनोत की अध्यक्षता एवं जयपुर के प्रख्यात साहित्यकार श्री ईशमधु तलवार के विशिष्ट आतिथ्य में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने स्टाफ़ सदस्यों को सम्मानित किया गया।श्री ईशमधु तलवार को बैंक की ओर से स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया ।

जयपुर अंचल में हिन्दी माह का गरिमामयी आयोजन

जयपुर अंचल में 07 सितम्बर से 07 अक्टूबर तक सभी क्षेत्रों एवं शाखाओं में हिन्दी माह का गरिमामयी आयोजन किया गया, जिसमे कई प्रतियोगिताएं एवं कार्यक्रम आयोजित किए गए । इस अवसर पर अंचल प्रमुख श्री एम एस महनोत ने सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं व्यक्त कीं ।

अंचल कार्यालय जयपुर द्वारा हिन्दी तिमाही कार्यशाला का आयोजन

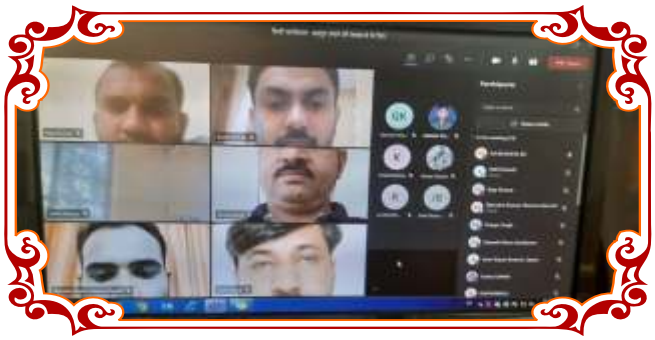

अंचल कार्यालय जयपुर द्वारा दिनांक 22.10.2021 को एक दिवसीय हिन्दी तिमाही कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस अवसर पर आंचलिक राजभाषा प्रभारी श्री सोमेन्द्र यादव सहित श्री जयपाल सिंह शेखावत ने शाखा के स्टाफ़ सदस्यों को राजभाषा नीति–नियम, यूनिकोड टाइपिंग, राजभाषा की आवश्यकता, तिमाही प्रगति रिपोर्ट भरने आदि के बारे में विस्तारपूर्वक बतलाया। इस कार्यशाला में कुल 36 स्टाफ़ सदस्य उपस्थित रहे।

स्टाफ़ सदस्यों के लिए सामर्थ्य टूल पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

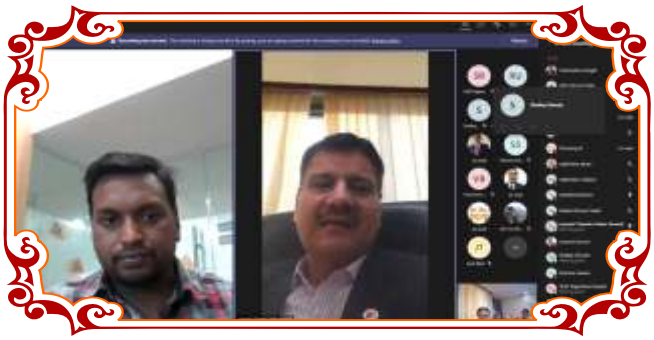

अंचल कार्यालय जयपुर के स्टाफ़ सदस्यों व अंचल के राजभाषा अधिकारियों के लिए दिनांक 24.12.2021 को प्रधान कार्यालय बड़ौदा के राजभाषा विभाग द्वारा तैयार सामर्थ्य टूल पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम में उप अंचल प्रमुख श्री आर सी यादव सहित अंचल कार्यालय के 67 स्टाफ़ सदस्य व जयपुर अंचल के सभी राजभाषा अधिकारीगण शामिल रहे ।

सदस्य बैंकों की गतिविधियाँ

बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

हिंदी दिवस-2021 का आयोजन

बैंक ऑफ बड़ौदा, जयपुर क्षेत्र द्वारा हिन्दी दिवस 2021 के अवसर पर दिनांक 14.09.2021 को जुलाई माह के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय जयपुर के विभागों के मध्य आयोजित "हिन्दी ई–मेल प्रतियोगिता" के विजेता विभागों को पुरस्कृत किया गया।

मॉडल शाखा में हिंदी प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 07.10.2021 को हिन्दी माह के अंतर्गत बैंक ऑफ बड़ौदा,जयपुर क्षेत्र की मॉडल शाखा आमेर रोड में स्टाफ सदस्यों हेतु हिन्दी वर्ग पहेली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें शाखा प्रमुख श्री पद्मनाभ मिश्रा सहित सभी स्टाफ सदस्यों ने प्रतिभागिता की।

'डिजिटल ज्ञानी' प्रतियोगिता का आयोजन

बैंक ऑफ बड़ौदा,जयपुर क्षेत्र द्वारा हिन्दी माह के अंतर्गत् दिनांक 23.09.2021 को वीकेआई शाखा में स्टाफ सदस्यों हेतु बैंक के डिजिटल चेनल्स के ज्ञान से संबंधित 'डिजिटल ज्ञानी' आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सहायक महाप्रबंधक डा. राजेश भाकर द्वारा विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

राजभाषायी रेटिंग में शीर्ष पर रही शाखाओं का सम्मान

बैंक ऑफ बड़ौदा, जयपुर क्षेत्र द्वारा सितम्बर 2021 तिमाही के दौरान शाखा स्तर पर राजभाषाई रेटिंग में शीर्ष पर रही शाखाओं को दिनांक 06.01.2021 को आयोजित समारोह के दौरान पुरस्कृत किया गया। उप महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख श्री एस के बंसल द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदान कर आमेर रोड, आदर्श नगर एवं गोपालपुरा बाईपास शाखा को सम्मानित किया गया।

'सामर्थ्य टूलकिट' आधारित कार्यशाला

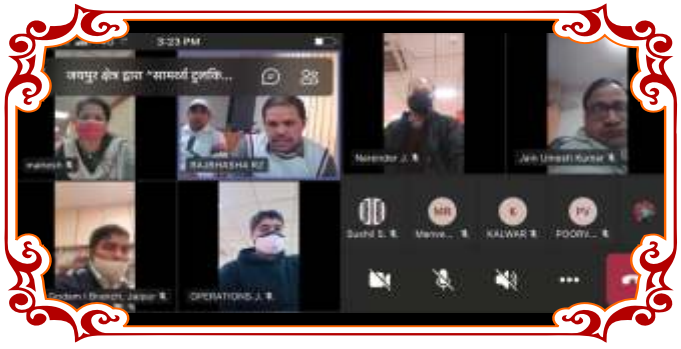

बैंक ऑफ बड़ौदा, जयपुर क्षेत्र द्वारा दिनांक 22.12.2021 को क्षेत्र के राजभाषा प्रेरकों हेतु बैंक द्वारा विकसित हिन्दी में काम करने में सहायक आईटी टूल्स पर आधारित 'सामर्थ्य टूलकिट' पर माइक्रोसॉफ़्ट टीम्स के माध्यम से प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया गया, जिसमें 23 स्टाफ सदस्यों ने प्रतिभागिता की। अंचल राजभाषा प्रभारी श्री सोमेन्द्र यादव एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री दलराज सिंह धनखड़ ने भी स्टाफ सदस्यों को संबोधित किया।

बैंक नराकास, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में ऑनलाइन संगोष्ठी

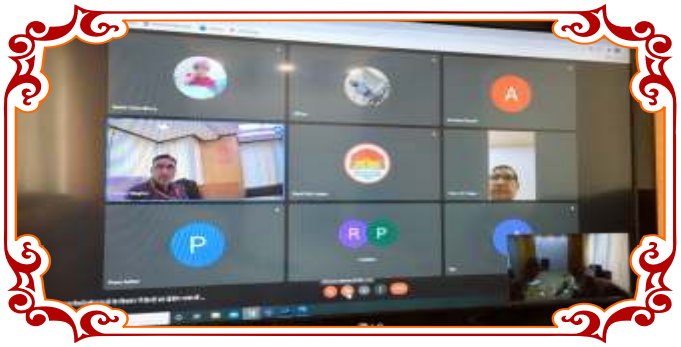

बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर एवं बैंक नराकास, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 27.09.2021 को "कृषि तकनीकों/योजनाओं के विस्तार में हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं की भूमिका" विषय पर ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी को मुख्य वक्ता के रूप में आचार्य डॉ. जे पी यादव, प्रभारी, कृषि प्रसार शिक्षा, श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर (जयपुर) ने संबोधित किया।इस दौरान सदस्य कार्यालयों से संबद्ध कृषि अधिकारी एवं राजभाषा अधिकारी जुड़े रहे।

सदस्य बैंकों की गतिविधियाँ

यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा निरीक्षण

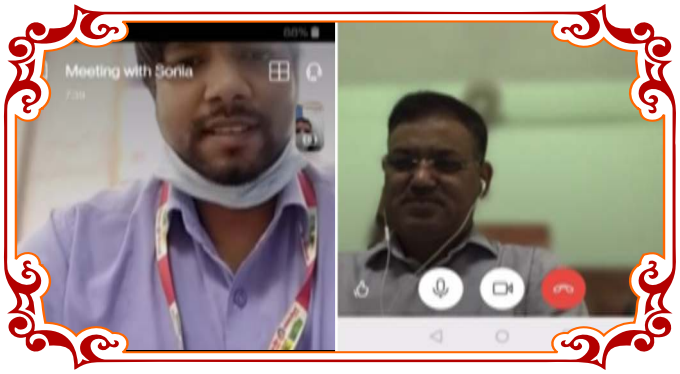

श्री नरेंद्र मेहरा, सहायक निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय एवं धौलपुर शाखा का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया.

हिंदी दिवस 2021

हिन्दी दिवस 2021 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को सम्मानित करते हुए श्री ओमप्रकाश करवा, उप महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख। इस अवसर पर राजभाषा संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया, जिसमें कार्यालय के सभी स्टाफ सदस्यों ने सहभागिता की।

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

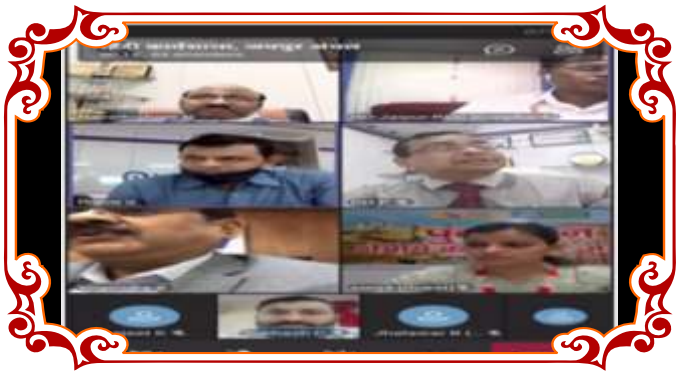

जयपुर अंचल द्वारा संयुक्त रूप से हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें श्री योगेंद्र यादव, क्षे.म.प्र. का., जयपुर एवं श्री एन. के. दीक्षित, सहायक प्रबन्धक(राभा), के.का., मुंबई ने भी अपना मार्गदर्शन दिया.

नराकास के तत्वावधान में ऑनलाइन वेबिनार

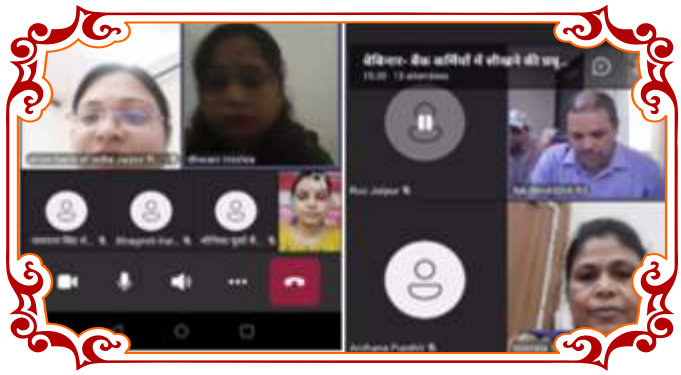

जयपुर अंचल द्वारा बैंक नराकास, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में "बैंक कर्मियों में सीखने की प्रवृत्ति" विषय पर ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया जिसमें अतिथि वक्ता के रूप में मोटिवेशनल स्पीकर श्रीमति ध्वनि मिश्रा ने संबोधित किया।

ईटीएफ (ETF) निवेश

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि पिछले 6–7 वर्षों में म्यूचुअल फंड निवेश में अत्यधिक ग्रोथ दर्ज हुई है । इसमे भी ईटीएफ अर्थात एक्सचेंज ट्रेडेड फंड की ग्रोथ 30 : सीएजीआर दर्ज की गई है । आइये जाने ईटीएफ क्या है ?

ईटीएफ एक म्यूचुअल फंड की स्कीम होती है अथवा शेयर्स और सेक्यूरिटीस का एक पोर्टफोलियो होता है जो कि एक्स्चेंज में बेचे जाते हैं । ये संयुक्त रूप से शेयर्स , म्यूचुअल फंड एवं बॉड्स की तरह लाभ दे सकते हैं। ईटीएफ की वे यूनिट्स जो एक्स्चेंज स्टॉक मार्केट मे लिस्टेड होती है, उन्हे शेयर्स की तरह ही स्टॉक मार्केट में खरीदा एवं बेचा जा सकता है। वर्ष 2015 से ईपीएफओ द्वारा इसके लिए मंजूरी प्रदान की गई थी। मार्च 2017 से मार्च 2021 तक इस इंडस्ट्री का आकार रु 50000 करोड़ से बढ़कर रु 350000 करोड़ हो गया है। महत्वपूर्ण बात यह है कि निवेशको की संख्या 5.5 लाख से बढ़कर 42 लाख हो गई है ।

ईटीएफ के फायदे :

म्यूचुअल फंड की एनएवी जिस तरह दिन की समाप्ति पर निर्धारित की जाती है एवं निवेशकों द्वारा उसी निर्धारित एनएवी पर खरीद अथवा बेचान किया जा सकता है। परंतु ईटीएफ में लाइव एनएवी (**NAV**) के आधार पर दिन में ट्रेडिंग समय के दौरान इसे उस समय के एनएवी मूल्य पर खरीदा अथवा बेचा जा सकता है। एक्टिव निवेशक भिन्न मूल्यो पर ट्रेड कर लाइव एनएवी का बहुत लाभ ले सकते हैं ।

ईटीएफ के प्रकार :

कुछ मुख्य एवं समान्यतः उपलब्ध ईटीएफ इस प्रकार हैं ।

1.इंडेक्स / डाईवर्सीफाइड़ ईटीएफ (ETF's):

यह एक बहुत ही सामान्य प्रकार की ईटीएफ है। बहुत प्रसिद्ध इंडेक्स जैसे निफ्टी 50, सेंसेक्स अथवा निफ्टी नैक्सट फिफ्टी की तर्ज पर होते हैं। ये बहुत कम कोस्ट के ईटीएफ होते हैं। ये बाजार में बहुत तरल प्रकृति के होते हैं । शुरुआत में निवेश के लिए यह उत्पाद लिया जा सकता है ।

2.सेक्टर /थेमेटीक ईटीएफ :

यह मार्केट के बड़े सेक्टर को प्रदर्शित करता है । जैसा कि भारत में मार्केट में बैंकिंग सेक्टर एवं आईटी सेक्टर दो बहुत बड़े सैक्टर हैं। इन ईटीएफ में निवेश उन निवेशकों के लिए बेहतर होता है जो इन सेक्टर को बखूबी समझते हैं एवं एक सीमा तक रिस्क ले सकते हैं। बड़े सैक्टर के लिए ईटीएफ बहुत लिक्विड है एवं आसानी से ट्रेड किया जा सकता है परंतु छोटे सेक्टर जैसे इन्फ्रा, मार्केट मे इतने लिक्विड नहीं है।

3.वायदा(Commodity) ईटीएफ :

ईटीएफ की इस कैटेगरी मे फिजिकल कमोडिटी जैसे सोना, क्रूड ऑइल, चाँदी एवं कृषि उत्पादों जैसे गेंहू, बाजरा इत्यादि मे निवेश किया जाता है। भारत में वर्तमान में सिर्फ गोल्ड़ ईटीएफ में निवेश की सुविधा ही उपलब्ध है । आरबीआई द्वारा शीघ्र ही चाँदी हेतु ईटीएफ स्कीम शुरू की जायेगी। यह माना गया है कि गोल्ड ईटीएफ में निवेश करके एक निवेशक बाजार मे अपने रिस्क को कम अथवा नियंत्रित कर सकता है ।

4.डैब्ट (Debt) ईटीएफ :

इस प्रकार के ईटीएफ में बहुत अधिक रिटर्न प्राप्त नहीं हो पाता है क्योंकि ये यील्ड एवं मोडिफाइड ड्यूरेशन प्रणाली के अनुसार कार्य करता है। म्यूचुअल फंड की लिक्विड कैटेगरी से इनकी समानता की जा सकती है। इसके नवीनतम उदाहरण जी सेक आधारित ईटीएफ (**GESEC BASED**) हैं।

5. इंटरनेशनल ईटीएफ :

इनके द्वारा विदेशो के इंडेक्स फंड मे निवेश किया जाता है । निवेश में लाभ विदेशी मार्केट के उतार चढ़ाव पर निर्भर करता है। मार्केट मे पोर्टफोलियो को बाँटने एवं रिस्क को कम करने की दृष्टि से यह ईटीएफ लोकप्रिय है। जैसे ईटीएफ, हेंग सेंग ईटीएफ इत्यादि। इस प्रकार हम उक्त प्रकार से विभिन्न प्रकार के ईटीएफ मे निवेश कर सकते हैं ।

नरसिंह सुहाग
अधिकारी
मानव संसाधन एवं विकास अनुभाग
पंजाब नेशलन बैंक
अंचल कार्यालय जयपुर

राजस्थानी साहित्यकार -कवि कल्लोल

प्रसिद्ध रचना –"ढोला मारू रा दूहा"

"ढोला मारू रा दूहा" ग्यारहवीं शताब्दी मे रचित राजस्थान का एक लोकभाषा–काव्य है। इसके लेखक कवि कल्लोल है। मूलतः दोहों में रचित इस लोक काव्य को सत्रहवीं शताब्दी मे कुशलराय वाचक ने कुछ चौपाइयां जोड़कर विस्तार दिया। इसमें राजकुमार ढोला और राजकुमारी मारू की प्रेमकथा का वर्णन है। यह राजस्थान की अत्यंत प्रसिद्ध लोक कथा है। इस लोकगाथा की लोकप्रियता का अनुमान निम्नलिखित दोहे से लगाया जा सकता है, जो राजस्थान में अत्यन्त प्रसिद्ध है!

'सोरठियो दूहो भलो, भलि मरवणरी बात!
'जोवन छाई धण भली, तारांछाई रात!

सम्पूर्ण विश्व प्रतिक्षण प्रेम का अभिलाषी है यह मनुष्य की आत्मा का सबसे मधुर पेय है। इसके बिना जीवन अपूर्ण है, आदि काल से मनुष्य प्रेम का संधान करता आया है यही कारण है कि धरती पर विकसित हुई समस्त सभ्यताओं में प्रेमाख्यानों की रचना हुई राजस्थानी प्रेमाख्यान विश्व साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं कथ्य, तथ्य, शिल्प विधान एवं रागात्मकता की दृष्टि से ही नहीं अपितु इतिहास, सांस्कृतिक वैशिष्ट्य एवं सामाजिक परम्पराओं की विविधता के कारण इन्हें लोक संस्कृति का कोश कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। प्राचीन एवं मध्यकालीन राजस्थानी प्रेमाख्यान गद्य एवं पद्य के साथ–साथ चम्पू विधाओं में भी मिलते हैं जिसमें गद्य एवं पद्य दोनों का मिश्रण होता है इस कारण प्रेमाख्यान वात, वेलि, वचनिका, विगत, दवावैत आदि शैलियों में रचे गए जिन्हें सार्वजनिक रूप से गाया एवं सुनाया जाता था प्रेमाख्यानों के गायन अथवा वाचन में रसोद्रेक प्रस्तुतकर्ता के कौशल पर अधिक निर्भर करता था थार रेगिस्तान में रहने वाली लंगा जाति इन प्रेमाख्यानों का प्रमुखता से गायन करती थी। प्रेमाख्यानों का आरम्भ प्रायः देवस्तुतियों के साथ होता था जिनमें सरस्वती एवं गणेश प्रमुख होते थे। इसके बाद कथा का स्थापना पक्ष होता था जिसमें कथानक के नायक एवं नायिका का परिचय भी सम्मिलित रहता था। कथानक के आगे बढ़ने पर प्रसंग के अनुसार स्वर के आरोह अवरोह बदलते थे जब प्रसंग वीर रस से ओत–प्रोत होता था तो वाणी में ओज तथा गति बढ़ जाती थी जबकि करुण रस के प्रसंग में कथावाचक अथवा गायक अपनी वाणी को भी करुण शब्दों के उपयुक्त बना लेता था।

इस कहानी के अनुसार नरवर के राजा नल के साल्हकुमार का विवाह महज 3 साल की उम्र में बीकानेर स्थित पूंगल क्षेत्र के पंवार राजा पिंगल की पुत्री से हुआ चूंकि यह बाल–विवाह था, अतः गौना नहीं हुआ था जब राजकुमार वयस्क हुआ। तो उसकी दूसरी शादी कर दी गई, परंतु राजकुमारी को गौने का इंतजार था। बड़ी होकर वह राजकुमारी अत्यंत सुंदर और आकर्षक दिखाई देती थी! राजा पिंगल ने दुल्हन को लिवाने के लिए, नरवर तक कई संदेश भेजे लेकिन राजकुमार की दूसरी पत्नी उस देश से आने वाले हर संदेश वाहक की हत्या करवा देती थी। राजकुमार अपने बचपन की शादी को भूल चुके थे लेकिन दूसरी रानी इस बात का जानती थी। उसे डर था कि राजकुमार को सब याद आते ही वे दूसरी रानी को छोड़कर चले जाएंगे क्योंकि पहली रानी बेहद खूबसूरत थी! पहली रानी इस बात से अंजान, राजकुमार को याद किया करती थी। उसकी इस दशा को देख पिता ने इस बार, एक चतुर ढोली को नरवर भेजा। जब ढोली नरवर के लिए, रवाना हो रहा था, तब राजकुमारी ने उसे अपने पास बुलाकर मारू राम में दोहे बनाकर दिए, और समझाया कि कैसे उसके प्रियतम के सम्मुख जाकर सुनाना है!

चतुर ढोली ,एक याचक बनकर नरवर के महल पहुंचा। रात में रिमझिम बारिश के साथ उसने ऊंची आवाज में मल्हार राग में शुरू किया। मल्हार राग का मधुर संगीत राजकुमार के कानों में गूंजने लगा। ढोली ने, साफ शब्दों में राजकुमारी का संदेश सुनाया। जैसे ही राजकुमार ने राजकुमारी का नाम सुना, उसे अपनी पहली शादी याद आ गई। ढोली ने बताया कि उसकी राजकुमारी कितनी खूबसूरत है और वियोग में है। राजकुमारी के चेहरे की चमक सूर्य के प्रकाश की तरह है, कपड़ों में से शरीर, ऐसे चमकता है मानो स्वर्ग झांक रहा हो, हाथी जैसी चाल, हीरें जैसे दांत, मूंग सरीखे होंठ है, बहुत से गुणों वाली, क्षमाशील, नम्र व कोमल है, झील के पानी जैसी है, उसका मन और तन श्रेष्ठ है लेकिन उसका साजन तो जैसे उसे भूला ही है और लेने नहीं आता।

सुबह राजकुमार ने उसे बुलाकर पूछा तो उसने राजकुमारी का पूरा संदेशा सुनाया। आखिर साल्हकुमार ने अपनी पहली पत्नी को लाने का निश्चय किया पर उसकी दूसरी पत्नी मालवारी ने उसे रोक दिया। आखिरकार एक दिन राजकुमार एक बहुत तेज चलने वाले ऊंट पर सवार होकर अपनी प्रियतमा को लेने पूंगल पहुंच गया। राजकुमारी अपने प्रियतम से मिलकर खुशी से झूम उठी दोनों ने पूंगल में कई दिन बिताए, नरवर जाने के लिए, राजा पिंगल से विदा ली! इसके बाद दोनों ने नरवर पहुंचकर ही दम लिया। यहां राजकुमारी का स्वागत सत्कार किया गया और वह, वहां की रानी बनकर राज करने लगी। इतिहास में इस प्रेमी जोड़े को ढोला मारू के नाम से जाना जाता है। तब से आज तक उनके नाम व प्रेम का गुणगाण किया जाता है।

कृष्णा शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक,
पंजाब नेशनल बैंक,
अंचल कार्यालय, जयपुर

आंखों के किनारे से

वो यादों की कलम से लिखी बचपन की कहानी,
कुछ ताजा कुछ पुरानी,
बह चली है आज, आंखों के किनारे से...

वो पुरानी बालक नीमें बिखरती सुनहरी धूप,
और बिस्तर तक महकती पूजा की धूप,
वो बारिश में गरजते बादलों का साज,
और तरन्नुम छेड़तीं कोयलों की राग,
बह चली है आज, आंखों के किनारे से...

वो तीखी दोपहरी में घुला आम का मीठापन,
दूसरे से ज्यादा खाने का लड़कपन,
वो चिलचिलाते आंगन में बहन भाइयों संग खेलने की याद,
किसी से ठने तो किसी के छेड़ने की फरियाद,
बह चली है आज, आंखों के किनारे से...

वो ढलती शाम में, माँ का पुकारना,
कहीं कोई आउट ना कर दे–ये सोच कर डर जाना,
वो गर्म–गर्म कढे हुए दूध का गिलास,
एक ही थाली में भाईयों संग खाई रोटी की मिठास,
बह चली है आज, आंखों के किनारे से...

वो नुक्कड़ के हलवाई का बनाया बूंदी का प्रसाद,
कचौरी समोसा और छोले–चाट का स्वाद,
वो रात में बिछौना गद्दा और चटाई,
और कूलर के सामने सोने की लड़ाई,
बह चली है आज, आंखों के किनारे से...

आज फिर से उस बिछड़े घर का ख्याल आया,
शायद कोई मिल जाए अपना, ये सोचकर
उस भूले बिसरे नम्बर पर फोन लगाया,
उस खाली कॉल ने ये याद दिलाई,
अब कभी उस नम्बर से कोई आवाज ना देगी सुनाई,

धुंधले बचपन की मीठी यादें और कशिश,
फिर कभी ना जी पाने की टीस और तपिश,
बह चली है आज, आंखों के किनारे से...

काव्या गौड़
एस डब्ल्यू ओ "ए"
यूको बैंक, अंचल कार्यालय, जयपुर

देश का मेरे मान रहे..

देश का मेरे मान रहे,
गणतंत्र का सम्मान रहे।
न रहे कोई धर्म–जात का भेद,
हर कोई पहले इंसान रहे।

जनमत का सम्मान रहे,
न सत्ता का अभिमान रहे।
न अभिव्यक्ति पर रोक रहे,
चाहे विचारों में मतभेद रहे।

कोई नेता बने या न्यायाधीश
बाबू से लेकर अफसर तक,
सबको अपने कर्तव्यों का ज्ञान रहे।
निजी स्वार्थ से परे, जन कल्याण का ध्यान रहे।

अनेकता में एकता,
मेरे देश की पहचान रहे।
मंदिर में अल्लाह गूँजे,
मस्जिद में भगवान रहे।
हर कोई सबसे पहले,
एक सच्चा इंसान रहे।

देश का मेरे मान रहे,
देश का मेरे मान रहे ।

नितिन लोहमरोड,
अधिकारी,
पंजाब नेशनल बैंक,
मंडल कार्यालय जयपुर

सदस्य बैंकों की गतिविधियाँ

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, जयपुर

भारतीय भाषा सौहार्द स्वरूप हिंदी माह 2021 पुरस्कार वितरण समारोह

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, जयपुर द्वारा 14 सितंबर 2021 को आयोजित भारतीय भाषा सौहार्द स्वरूप हिंदी दिवस समारोह में जयपुर के प्रसिद्ध पत्रकार एवं साहित्यकार श्री ईशमधु तलवार को प्रथम "विजयदान देथा भाषा सेतु सम्मान" से विभूषित ने किया गया। "राजस्थान प्रगतिशील लेखक संघ" के महासचिव एवं जयपुर के प्रसिद्ध "जन साहित्य उत्सव" के आयोजक ईशमधु तलवार को अग्रणी बैंक प्रबंधक श्री पूरण मल बुनकर, क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्र एवं अंचल कार्यालय के कार्यपालकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति में बैंक के क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्र,जयपुर के प्राचार्य एवं सहायक महाप्रबंधक श्री जी एल वर्मा और मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) डॉ सुधीर कुमार साहु ने "विजयदान देथा भाषा सेतु सम्मान" से सम्मानित किया।

यूको राजभाषा सम्मान 2020-21

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, जयपुर द्वारा 5 अगस्त 2021 को राजस्थान विश्वविद्यालय की पिछली एम ए हिंदी परीक्षा में सर्वाधिक अंक पाने वाले दो विद्यार्थियों, श्री मंजीत सिंह और सुश्री नीतू यादव को यूको राजभाषा सम्मान 2020–21 से सम्मानित किया गया। उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री प्रेमशंकर झा ने उन्हें पांच–पांच हजार रुपयों के चेक और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। कार्यक्रम में उप अंचल प्रमुख श्री बी एस गर्ग सहायक महाप्रबंधक श्री एम एम दुगड़, क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्र, जयपुर के प्राचार्य श्री जी एल वर्मा एवं सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। संयोजन राजभाषा विभाग की मोनिका ने एवं संचालन डॉ सुधीर कुमार साहु ने किया। राजस्थानी में स्वागत मुख्य प्रबंधक श्री धर्मवीर सिंह शेखावत ने तथा धन्यवाद ज्ञापन मुख्य प्रबंधक श्री पवन पुरोहित ने किया।

यूको पाठक मंच प्रेमचंद सप्ताह 2020-21

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, जयपुर द्वारा 5 अगस्त 2021 को यूको पाठक मंच के अंतर्गत प्रेमचंद सप्ताह का आयोजन किया, अंचल प्रमुख श्री प्रेमशंकर झा ने मैथिल कोकिल विद्यापति का रचनात्मक परिचय देकर कार्यक्रम का समापन किया। सप्ताह की शुरुआत कार्यालय के सभी कार्मिकों को प्रेमचंद एवं हिंदी एवं राजस्थानी के अन्य प्रमुख लेखकों की पुस्तकें वितरित की गई थीं, जिसके आधार पर उन्होंने अपनी प्रस्तुतियां दीं। डॉ सुधीर कुमार साहु के संचालन में मोनिका, दीपिका सोनी, भाग्यश्री नीलम भारती, किरण मीना एवं गगन गुप्ता ने पढ़ी गई पुस्तकों एवं उनके लेखकों के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए। सहायक महाप्रबंधक श्री एम एम दुगड़ ने प्रसिद्ध हिंदी व्यंग्य लेखक हरिशंकर परसाई के लेखन की समीक्षा की।

सदस्य बैंकों की गतिविधियाँ

केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, जयपुर

दिनांक 23.09.2021 को अंचल कार्यालय में आयोजित हिंदी दिवस समारोह 2021 के दौरान महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री पुरशोत्तम चन्द द्वारा अध्यक्षीय संबोधन दिया गया ।

दिनांक 30.09.2021 को अंचल प्रमुख एवं महा प्रबंधक श्री पुरशोत्तम चन्द की अध्यक्षता में "सरकार द्वारा प्रायोजित बचत व बीमा योजनाएं : महत्ता व कार्यान्वयन " विषय पर हिंदी में परिचर्चा कार्यक्रम आयजित किया गया ।

दिनांक 16.06.2021 को अंचल कार्यालय, जयपुर में अंचल प्रमुख श्री पुरशोत्तम चन्द की अध्यक्षता में "दबावग्रस्त आस्तियों की पहचान और उनका प्रबंधन" विषय पर हिन्दी में परिचर्चा कार्यक्रम आयोजित किया गया ।

दिनांक 14.09.2021 को क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर, द्वितीय में सहायक महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय कार्यालय, प्रमुख श्री डी के सिंहा की अध्यक्षता में हिंदी दिवस समारोह 2021 का आयोजन किया गया ।

दिनांक 30.09.2021 को अंचल प्रमुख एवं महा प्रबंधक श्री पुरशोत्तम चन्द की अध्यक्षता में "सरकार द्वारा प्रायोजित बचत व बीमा योजनाएं : महत्ता व कार्यान्वयन " विषय पर हिंदी में परिचर्चा कार्यक्रम आयजित किया गया ।

दिनांक 15.05.2021 को केनरा बैंक क्षेत्रीय कार्यालय–I जयपुर द्वारा अंचल प्रमुख श्री पुरशोत्तम चन्द के मार्गदर्शन में कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधि (**CSR**) के अंतर्गत खाद्य सामग्री वितरित की गई ।

सदस्य बैंकों की गतिविधियाँ

बैंक ऑफ इण्डिया, अंचल कार्यालय, जयपुर

अभिप्रेरणा कार्यक्रम 'हिन्दी उत्सव' का आयोजन

दिनांक 13.09.2021 को आंचलिक प्रबन्धक श्री वैभव आनंद की अध्यक्षता एवं उप आंचलिक प्रबंधक श्री के. के. मिश्रा के मार्गदर्शन में "अभिप्रेरणा कार्यक्रम हिन्दी उत्सव" का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राजस्थान के मशहूर कवि, गीतकार, शायर एवं साहित्यकार श्री इकराम राजस्थानी मुख्य अतिथि एवं वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे। उन्होंने भारतीय भाषाओं एवं हिन्दी भाषा के महत्त्व पर अपने विचार एवं अनुभव साझा किए। आंचलिक प्रबंधक श्री वैभव आनंद ने बताया कि वर्तमान समय में भाषायी शुद्धता पर ध्यान देने की व भावी पीढ़ी को अपनी भाषा एवं साहित्य की ओर उन्मुख करने की आवश्यकता है।

हिन्दी दिवस समारोह एवं आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में आंचलिक कार्यालय के समस्त स्टाफ सदस्यों को हिन्दी में कार्य करने के लिए आंचलिक प्रबन्धक महोदय ने संकल्प दिलाया। उप आंचलिक प्रबन्धक महोदय ने सभी स्टाफ सदस्यों के समक्ष माननीय एमडी एवं सीईओ महोदय के संदेश का वाचन किया। तत्पश्चात आंचलिक कार्यालय के स्टाफ सदस्यों के लिए आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें आंचलिक कार्यालय के 15 स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया। हिन्दी माह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को आंचलिक प्रबन्धक द्वारा पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

हिन्दी कविता लेखन प्रतियोगिता

आंचलिक कार्यालय एवं समस्त अंचल के स्टाफ सदस्यों के लिए दिनांक 02.09.2021 को हिन्दी कविता लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें आंचलिक कार्यालय के 25 स्टाफ सदस्यों से प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई इसके अंतर्गत कुल 5 विजेताओं को (प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं दो प्रोत्साहन पुरस्कार) प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार आंचलिक प्रबन्धक श्री वैभव आनंद एवं उप आंचलिक प्रबन्धक श्री के. के. मिश्रा द्वारा प्रदान किए गए।

उदयपुर झीलों के उस पार ...

सन् 1829 में कर्नल जेम्स टोड ने उदयपुर को 'Most romantic spot on the continent of India के नाम से अभिहित किया था और अपनी झीलों के सौंदर्य और महलों के राजसी ठाट–बाठ के चलते यह शहर आज भी अपने इस नाम को सार्थकता प्रदान करता है। इतना ही नहीं,उदयपुर अपनी झीलों के कारण 'झीलों की नगरी' के नाम से विश्व विख्यात है, परंतु यह इस शहर का एक पक्ष है। इस शहर का दूसरा पक्ष इसके स्वर्णिम इतिहास के पन्नों पर अंकित है। आइए, आज मैं आपको 'झीलों की इस नगरी' के उस पार की यात्रा पर अपने साथ लिए चलती हूँ.....

महाराणा प्रताप सिंह के नाम से कौन अनभिज्ञ है? हल्दीघाटी के युद्ध की वीरगाथा से कौन अपरिचित है? इन दोनों का गहरा संबंध उदयपुर से है।

स्वतंत्रता पूर्व मेवाड़ राजस्थान के दक्षिण–मध्य में स्थित एक रियासत थी। इसमें आधुनिक भारत के उदयपुर, भीलवाड़ा, राजसमंद, चित्तौगढ़ तथा प्रतापगढ़ आदि जिले सम्मिलित थे। उस समय मेवाड़ की राजधानी चित्तौडगढ़ थी। मुगल सम्राट अकबर ने सन् 1568 में चित्तौडगढ़ पर आधिपत्य स्थापित कर लिया। इस विकट घेराबंदी में मुगलों ने मेवाड़ के उपजाऊ क्षेत्र को अपने अधीन कर लिया था। जंगल और शेष पहाड़ी राज्य अभी भी राणा उदय सिंह के नियंत्रण में थे। चित्तौडगढ़ पर मुगलों का आधिपत्य स्थापित होने के बाद राणा उदय सिंह ने उदयपुर को मेवाड़ राज्य की राजधानी बनाया। राणा उदय सिंह की 1572 में मृत्यु के पश्चात महाराणा प्रताप सिंह मेवाड़ के 13वें शासक बने।

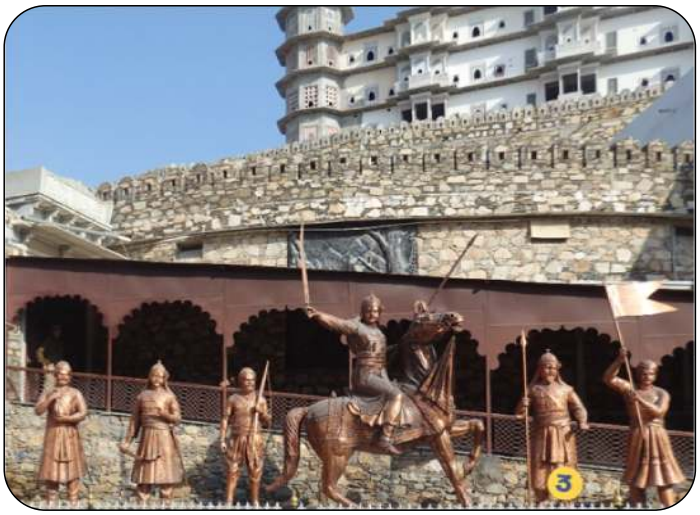

महाराणा प्रताप सिंह ने जब राजगद्दी संभाली तब उन्हें बहुत विकट राजनैतिक परिस्थियों का सामना करना पड़ा। बादशाह अकबर ने राजस्थान के राज्यों और राजाओं को एक–एक करके अधीनता में लाने का कार्य प्रारंभ कर दिया था। इसके फलस्वरूप मारवाड़, आमेर, बीकानेर, बूँदी आदि के राजाओं ने मुगल सम्राट की अधीनता स्वीकार कर ली थी। अकबर मेवाड़ पर भी आधिपत्य स्थापित करना चाहता था परंतु महाराणा प्रताप सिंह का स्वाभिमान उसे अपनी इस योजना में सफल नहीं होने दे रहा था। महाराणा प्रताप किसी भी मूल्य पर अकबर की अधीनता स्वीकार करने के लिए सहमत नहीं थे। उन्हें इस बात का भी आभास था कि मुगल फौज का उनके राज्य पर कभी भी आक्रमण हो सकता है, इसलिए वे निरंतर युद्ध की तैयारी में लगे रहे। उन्होंने अकबर की सेना के साथ युद्ध करने के लिए राजपूतों को तैयार किया। इन दिनों में पहाड़ पर रहने वाले बहुत से भील भी महाराणा प्रताप के साथ आ मिले। अपनी इस सेना को लेकर महाराणा प्रताप अरावली पर्वत के मार्ग पर पहुँच गए।

जिस पहाड़ी स्थान पर जाकर अपनी सेना के साथ महाराणा प्रताप मुगल सेना की प्रतीक्षा करने लगे, वह घने जंगलों से घिरा हुआ था। उदयपुर से उस स्थान पर जाने वाला मार्ग बहुत संकरा, कठोर और भयानक था। इसी स्थान का नाम हल्दीघाटी है। यह कहा जाता है कि यहाँ की मिट्टी

पीतवर्ण की होने के कारण ही इस स्थान का नाम हल्दी घाटी पड़ा।

जून 1576 में हुए ऐतिहासिक हल्दीघाटी के युद्ध में मुगलों की सेना का नेतृत्व आमेर के राजा मान सिंह कर रहे थे और महाराणा प्रताप घुड़सवारों और धनुर्धर भीलों की अपनी मुट्ठी भर सेना लेकर मुगलों की सेना पर टूट पड़े। हल्दीघाटी का यह युद्ध बहुत ही भीषण था और महाराणा प्रताप और उनकी सेना ने अपनी वीरता और पराक्रम से मुगलों की सेना के छक्के छुड़ा दिए।

महाराणा प्रताप राजा मान सिंह की खोज में मुगलों की सेना के बीचों बीच पहुँच गए और अपने घोड़े पर सवार वे हाथी पर सवार राजा मान सिंह पर हमला करने के लिए उद्दत हो गए। इस समय तक युद्ध और भी भयंकर हो चुका था और बहुत से मुगल सैनिकों और सरदारों ने महाराणा प्रताप को चारों ओर से घेर लिया था और उन पर निशाना साधा जा रहा था। युद्ध की इस बिगड़ती परिस्थिति को देखकर सामंत मन्नाजी आगे बढ़े और उन्होंने महाराणा प्रताप का राजमुकुट उतारकर अपने सिर पर रख लिया और बहुत तेजी से महाराणा प्रताप से आगे बढ़ गए। महाराणा प्रताप परिस्थिति की गंभीरता को देखते हुए पीछे हट गए और अपने घोड़े 'चेतक', जिसे कुछ इतिहासकार 'चेटक' भी कहते हैं, पर सवार होकर पर्वत की तरफ बढ़ गए। इस युद्ध में चेतक के चेहरे पर हाथी का मुखौटा लगाया गया था, ताकि उसे हाथी का बच्चा समझा जाए।

महाराणा प्रतापसिंह और उनका प्रिय घोड़ा इस युद्ध में बहुत बुरी तरह से घायल हो गए थे। 'चेतक' ने कुछ दूर जाने पर अपने प्राण त्याग दिए। हल्दीघाटी के इस युद्ध में दोनों ओर के अनेक योद्धा मारे गए। यद्यपि इस युद्ध में मुगल सेना विजयी रही, पर महाराणा प्रताप सिंह और उनकी सेना ने जिस शूरवीरता, साहस, पराक्रम, शौर्य और स्वाभिमान का परिचय दिया, उसने उन्हें न केवल इतिहास के पन्नों पर सुनहरे अक्षरों से दर्ज कर दिया, अपितु एक अविस्मरणीय और अतुलनीय उदाहरण भी बना दिया।

आज भी हल्दीघाटी में महाराणा प्रताप सिंह की कीर्ति गाथा प्रस्तुत करने वाला एक स्मारक है। यहाँ पर मूर्तियों के माध्यम से हल्दीघाटी के युद्ध को चित्रित किया गया है। इस स्मारक के भीतर महाराणा प्रताप सिंह के जन्म से लेकर उनके स्वर्ग सिधारने तक की सभी घटनाओं का लाइट, साउंड और मूर्तियों के माध्यम से इतने सजीव रूप से नाट्य चित्रण और वर्णन के माध्यम से दिखाया जाता है कि दर्शकों को यह आभास होने लगता है कि मानो इतिहास का एक–एक पन्ना उलट रहा है और एक–एक घटना उनकी आँखों के सामने जीवंत हो उठी है।

इस स्मारक से कुछ दूरी पर ही 'चेतक' का स्मारक भी बनाया गया है।

यूं तो सम्पूर्ण उदयपुर ही इन स्मृतियों से भरा हुआ है, परंतु इस स्थल में कुछ तो ऐसा जादू है जो आपको सर्वथा भिन्न अनुभूति कराएगा और यहाँ से लौटने पर आपको ऐसा अनुभव होने लगेगा मानो आप एक अभूतपूर्व इतिहास के साक्षी बनकर वापिस आ रहे हैं। संभवतः इसीलिए श्याम नारायण पाण्डेय ने अपनी सुप्रसिद्ध कविता 'हल्दीघाटी' में लिखा है –

"वंडोली है यही, यहीं पर
है समाधि सेनापति की।
महातीर्थ की यही वेदिका
यही अमररेखा स्मृति की

.....

आज यहीं इस सिद्ध पीठ पर
फूल चढ़ाने आया हूँ।
आज यहीं पावन समाधि पर
दीप जलाने आया हूँ।"

डॉ. निधि शर्मा
प्रबंधक
भारतीय रिज़र्व बैंक, जयपुर

महामारी के दौर में बैंकिंग के लिए नये अवसर

पूरी दुनिया इस वक्त महामारी से लड़ रही है और इस दशक के सबसे मुश्किल दौर से गुजर रही है। सभी तरह की आर्थिक गतिविधियां रुक गयी हैं या बुरी तरह से प्रभावित हुई हैं।

हमने लोगों को पलायन से, भूख से, अच्छी स्वास्थ्य संबधित सेवाओं की कमी से जूझते देखा है, परेशान होते देखा है। कुछ चित्र तो बहुत डराने वाले, रुलाने वाले हैं जिन्हें हम सभी ने कहीं न कहीं महसूस किया है।

यह अवधारणा बहुत गहरे से सभी के मन में जमने लगी है कि दुनिया अब दो तरीकों से पहचानी जाएगी, एक कोरोना के पहले और एक कोरोना के बाद।

इस मुश्किल और चुनौती भरे समय में पूरा विश्व आर्थिक मंदी की संभावनाओं का सामना कर रहा है और प्रयास कर रहा है कि कम से कम प्रभाव पड़े। हम सभी इसी कोशिश में हैं कि जीवन को एक तरफ कोरोना और दूसरी तरफ भुखमरी, बीमारी और गरीबी से कैसे बचाया जाए। हमारा देश इस क्षेत्र में पुरजोर प्रयास कर रहा है और दूसरे देशों की मदद भी कर रहा है, जिसे दुनिया सराह भी रही है।

महामारी के बाद होने वाली समस्याएँ :– हमारे देश ने पिछले कई दशकों में काफी तरक्की की है,लेकिन आज भी समाज मेंगहन आर्थिक विभाजन, बेरोजगारी, गॉवों से शहरों में पलायन, भुखमरी,जैसी बड़ी समस्या पहले से ही मौजूद हैं। ऐसे में अब यहाँ अगर आर्थिक मंदी का सामना भी करना पड़ा तो यह दशक बहुत मुश्किल भरा रहेगा और इससे होने वाली दूसरी समस्या बहुत गहरा प्रभाव डालेंगी।

आर्थिक विभाजनः– हमारा देश आज दो भागों में बंटा हुआ लगता है। एक तरफ प्रगतिशील चमचमाता "न्यू इंडिया" है जहां पैसा खर्च करने से पहले सोचने की जरूरत नहीं है, और दूसरी तरफ "भारत" है जहां लोगों के लिए आज भी सुबह का सबसे बड़ा सवाल यह है कि आज दो वक्त की रोटी की व्यवस्था कैसे होगी। यह विभाजन दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है और महामारी से यह वृद्धि और भी तीव्र हो गई है। इसे कैसे रोका जाए, यह आने वाले समय में बड़ी चुनौती होगी।

रोजगारः– हमारे सामने यह गंभीर चुनौती है कि सभी बेरोजगारों को रोजगार कैसे उपलब्ध कराया जाए। समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े व्यक्ति की निम्नतम आय कम से कम इतनी हो कि वह अपने परिवार की परंपरागत मूलभूत आवश्यकताओं – रोटी, कपड़ा और मकान को पूरा कर सके। साथ ही, इस नये समाज में नई पनपी मूलभूत आवश्यकताओं – शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक अपनी पहुंच बना सके। इस समय हमारा देश छिन रहे हैं, नौकरियां जा रही हैं।

गॉवों से शहरों में पलायनः– गॉवों से शहरों में पलायन हमारे देश में शुरू से ही एक बड़ी समस्या रही है और इस समस्या का भयावह और विकृत चेहरा हमने तालाबंदी के समय देखा है, जब हमारे देश ने विभाजन के बाद का सबसे बड़ा पलायन देखा। हालांकि यह उल्टा पलायन था जो कि शहरों से गांवों की ओर था। लेकिन इससे पता चला कि गांवों के कितने लोग शहरों में रोटी कमाने के लिए बदहाली में जीवन बिता रहे हैं। ये लोग शहरों में रहते हुए भी ग्रामीण ही हैं, इन्हें शहरों का नागरिक नहीं कहा जा सकता। वरना इन्हें किसी आपदा में शहर छोड़कर गांवों की ओर भागने की जरूरत क्यों महसूस होती?

इस पलायन की मुख्य वजह ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों की कमी का होना है। ऐसे पलायन से शहरी क्षेत्रों पर बहुत दबाब आ जाता है। आर्थिक रूप से सशक्त न होने की वजह से इन अधिकांश लोगों को ऐसी परिस्थितियों में जीवन बिताना पड़ रहा है, जिसे हम किसी भी तरह से उचित नहीं मान सकते। अगर ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन सुगम हो पाए तो इस पलायन पर काफी हद तक काबू पाया जा सकता है।

कृषि की उपेक्षाः– आज भी हमारे देश मे कृषि को एक व्यवसाय के तौर पर पहचान नहीं मिल पाई है। नयी पीढ़ी कृषि से दूर ही रहना चाहती है और जो कृषि से जुड़े हैं वे भी अधिकांशतः मजबूरी में और अन्य उचित अवसरों की कमी के कारण जुड़े हैं। ऐसा वस्तुतः उपज का सही मूल्य न मिलने और सही

भंडारण और विपणन सुविधाओं की कमी होने के कारण है।

एक देश और एक समाज के तौर पर हमारे ये प्रयास होने चाहिए कि हर नागरिक के लिए उचित रोजगार उपलब्ध करवाने के प्रयास हों। अगर कोई व्यक्ति काम करना चाहे, तो कम से कम उसकी क्षमता के अनुसार मौके उपलब्ध हों, ऐसे प्रयास करने होंगे। अगर हम एक देश और एक समाज के तौर पर इन चुनौतियों का सामना नहीं कर पाए, लड़ नहीं पाए और जीत नहीं पाए तो आने वाला समय बहुत भयावह और अराजकता वाला होगा। महामारी से उपलब्ध अवसर हमारा देश आज दुनिया का सबसे बड़ा बाजार है। पूरी दुनियाँ यहाँ उपलब्ध व्यावसायिक मौकों को भुनाना चाहती है। यह उपभोक्ता क्षमता हमारी सबसे बड़ी ताकत है। कहते हैं न, "आवश्यकता आविष्कार की जननी है।" इस महामारी ने हमें बहुत सारे नये रास्ते, नये अवसर दिखाए हैं। इस दौरान एक–दूसरे का सहयोग करना, पलायन कर रहे ग्रामीण मजदूरों को घर पहुचने में मदद करना, भूखों को खाना खिलाना,ऐसे बहुत से उदाहरण हमने देखे,जब मानवता के कई :प हमें नजर आए। इस मुश्किल समय ने लोगों को "सोशल डिस्टेन्स" यानी भौतिक दूरी को अपनाते हुए रिश्ते निभाना, व्यवसाय के नए मौकों को भुनाना सिखाया है। "मेक इन इंडिया", "स्टार्ट–अप इंडिया', "आपदा में अवसर" और "लोकल फॉर वोकल" आदि इसी दिशा में किए गए प्रयास हैं जिन्हें सार्थक बनाने में सभी वर्गों की भागीदारी आवश्यक है।

विनिर्माणः– हमारे पास पूरी दुनिया के लिए एक विश्वसनीय निर्माण केंद्र बनने की पूरी क्षमता है। सही और सार्थक प्रयासों से हम इसे हासिल कर सकते हैं। हमारे देश ने कुछ ही दिनों में पीपीई किट, सर्जिकल मास्क आदि के निर्माण की आवश्यकताओं को पूरा किया है। यह हमारी निर्माण करने की क्षमता को दर्शाता है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों को जोड़कर हम गांवों से शहरों की ओर होने वाले पलायन को भी रोक सकते हैं और अपने उत्पादों की लागत भी कम कर सकते हैं।

आयुर्वेद एवं योगः– लोगों ने "पहला सुख– निरोगी काया" के मर्म को समझा। योग को अपनाया। पूरी दुनिया ने भारतीय "नमस्ते" को अपनाया, भारतीय संस्कृति और इसके महत्व को समझा। आयुर्वेद, योग, भारतीय खान–पान आदि हमारे देश में बहुत सारे नये अवसर उपलब्ध करवा सकता है। हमें इस अवसर से लोगों को जोड़कर नये अवसर बनाने होंगे।

कृषिः– इस महामारी के समय सभी ने यह महसूस किया कि जीने के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता रोटी, कपड़ा और मकान ही हैं। दुनिया में हर भौतिक वस्तु की आवश्यकता खत्म हो सकती है, लेकिन भोजन की नहीं। अच्छे भोजन की जरूरत सभी ने महसूस की है। आने वाले वक्त में यह आवश्यकता और मजबूत होगी।

बैंकों की भूमिका : किसी भी देश की आर्थिक उन्नति में बैंकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। हमारे देश में जहां ग्रामीण और कृषि आधारित जनसंख्या ज्यादा है, वहाँ पर बैंकों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।

किसी भी व्यवसाय में सबसे महत्वपूर्ण है "लो कोस्ट कैपिटल", और नए व्यवसाय में यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। सही समय पर उचित पूँजी का होना बहुत आवश्यक है अन्यथा किसी भी व्यवसाय का चल पाना बहुत कठिन हो जाता है। राष्ट्रीयकृत बैंक हमारे देश में यह भूमिका पहले से निभाते आए हैं और अब इस महामारी के दौर में यह और भी महत्वपूर्ण बन गई है। हमारे देश को आज नौकरी करने वालों से कहीं ज्यादा नौकरी देने वालों की जरूरत है। बैंक लोगों के खुद के रोजगार पाने और व्यवसाय चलाने में सबसे बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। डाइरैक्ट एडवांस, वैंचर कैपिटल, कैपिटल फंड, इन सभी पर बहुत ध्यान देना होगा और नये अवसरों के लिए रास्ते सुगम बनाने होंगे। कृषि सुधार बहुत मत्वपूर्ण है और इसके लिए कई प्रयास भी किए जा रहे हैं। बैंकों की पहुँच सीधे ग्रामीण क्षेत्रों तक है और बैंक कृषकों को उन्नत तकनीक, नकद फसल अपनाने के लिए, एग्री प्रोसेसिंग यूनिट और भंडारण सुधार के लिए प्रेरित कर सकते हैं और आर्थिक सहायता उपलब्ध करवा सकते हैं। नई पीढ़ी अगर कृषि और कृषि आधारित कार्यों को व्यवसाय के तौर पर देखे और अपनाए, तो बेरोजगारी, पलायन जैसी गंभीर समस्याओं से निजात मिल सकती है।

कोरोना महामारी सभी के लिए बहुत चुनौतीपूर्ण है, लेकिन मनुष्य की जिजीविषा ने हमेशा ही हर कठिनाई से उसे उबारा है। इस कठिन दौर में हमें "आपदा में अवसर" ढूँढ़ने होंगे, इन अवसरों को भुनाना होगा, और सबके साथ आगे बढ़ना होगा। इन उपलब्ध कठिन अवसरों को सुगम बनाना होगा और एक व्यक्ति एवं संस्था के तौर पर एक–दूसरे की मदद करनी होगी। तभी हम धरती पर मानवता को मिटने से बचा पाने में सफल हो पाएंगे।

प्रदीप कुमार जांगिड़
वरिष्ठ प्रबंधक (संकाय)
यूको बैंक
क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्र
जयपुर

सदस्य बैंकों की गतिविधियाँ

इंडियन बैंक

हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

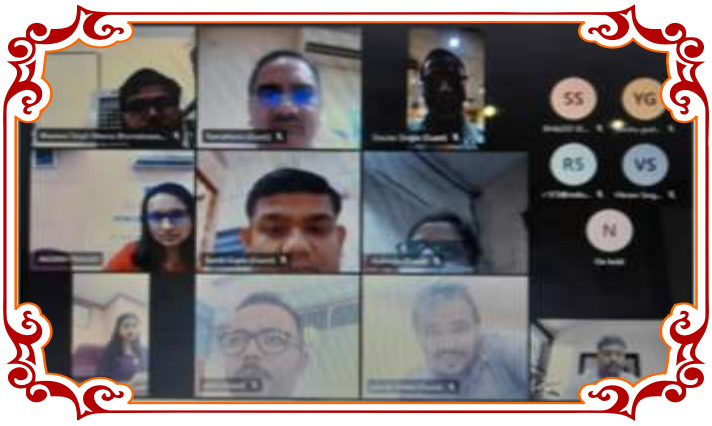

अंचल कार्यालय, जयपुर द्वारा शाखाओं हेतु सितंबर माह और दिसंबर माह में ऑनलाइन हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई

नराकास के तत्वावधान में इंडियन बैंक द्वारा आयोजित 'अंतर बैंक वर्ग पहेली प्रतियोगिता'

इंडियन बैंक अंचल कार्यालय, जयपुर द्वारा नराकास के तत्वावधान में सभी सदस्य बैंकों हेतु ऑनलाइन "हिन्दी वर्ग पहेली" प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें 11 बैंकों से 20 प्रतिभागियों ने प्रतिभागिता की ।

इंड-मरूधरा के द्वितीय अंक का विमोचन

जयपुर अंचल की हिन्दी पत्रिका "इंड–मरुधरा" के द्वितीय अंक का विमोचन अंचल प्रबंधक, उप अंचल प्रबंधक, अंचल कार्यालय के सभी स्टाफ सदस्यों एवं अंचल के सभी शाखा प्रबंधकों की उपस्थिति में किया गया ।

हिन्दी दिवस का आयोजन

अंचल कार्यालय, जयपुर में हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु अंचल प्रबंधक श्री जगदीश प्रसाद के साथ सभी स्टाफ सदस्य ने शपथ ग्रहण की ।

सदस्य बैंकों की गतिविधियाँ

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया,क्षेत्रीय कार्यालय जयपुर

में हिन्दी माह एवं हिन्दी दिवस का आयोजन

जयपुर क्षेत्र में हिन्दी माह का उद्घाटन महाप्रबंधक श्री के सत्यनारायणन द्वारा किया गया। माह के दौरान सभी वर्ग के कर्मचारियों के लिए गीत गायन, कहानी लेखन, यूनिकोड़ टाइपिंग, हिन्दी प्रश्नोत्तरी एवं हिन्दी विचार अभिव्यक्ति प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। प्रतियोगिताओं के विजेताओं को श्री एम एस अख्तर, वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक के कर–कमलों से पुरस्कार वितरित किए गए।

ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया द्वारा समिति के तत्वावधान में 'नेतृत्व कौशल एवं व्यक्तित्व विकास'' पर संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 30.10.2021को किया गया जिसके दौरान मुख्य वक्ता श्रीमती ध्वनि मिश्रा ने अपना व्याख्यान दिया। कार्यक्रम में बैंक नराकास जयपुर के सदस्य सचिव श्री सोमेन्द्र यादव सहित विभिन्न बैंकों के राजभाषा प्रभारी उपस्थित रहे।

पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा स्टाफ सदस्यों में पठन–पाठन के प्रति रूचि विकसित करन के उद्देश्य से पुस्तक एवं राजभाषा कार्यान्वयन प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । इस अवसर पर कार्यालय को प्राप्त राजभाषा पुरस्कारों की प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसका अनावरण बैंक नराकास जयपुर के सदस्य सचिव श्री सोमेन्द्र यादव एवं श्री एम एस अख्तर, वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक ने किया ।

सिडबी, अंचल कार्यालय, जयपुर

हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन

सिडबी द्वारा सतर्कता सप्ताह 2021 के दौरान आदर्श विद्या मंदिर जनता कॉलोनी आदर्श नगर में कक्षा 11 व 12 के विद्यार्थियों के लिए एक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें कुल 55 बच्चों ने सहभागिता की।

सतर्कता सप्ताह के दौरान प्रतियोगिता आयोजित

हिंदी पखवाड़ा 2021 के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिनमें स्टाफ सदस्यों ने उत्साह पूर्वक सहभागिता की। साथ ही, हिंदी माह के दौरान सर्वाधिक कार्य हिंदी में करने वाले 2 स्टाफ सदस्यों को पुरस्कृत भी किया गया।

सदस्य बैंकों की गतिविधियाँ

पंजाब नेशनल बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय जयपुर

राजभाषा समारोह - 2021

राजभाषा समारोह – 2021 में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण करते हुए अंचल प्रबंधक श्री बी पी महापात्र व अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण।

हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

हिंदी माह के दौरान अंचल कार्यालय, जयपुर में दिनांक 09.09.2021को हिन्दी कार्यशाला के आयोजन में सहभागिता करते अंचल कार्यालय, जयपुर के स्टाफ सदस्य।

बैंक नराकास, जयपुर के तत्वावधान में विद्यालय में प्रतियोगिता का आयोजन

पंजाब नैशनल बैंक, अंचल कार्यालय द्वारा बैंक नराकास, जयपुर के तत्वावधान में दिनांक 26 नवम्बर, 2021 को राजकीय प्राथमिक विद्यालय , बजाज नगर , जयपुर के छात्र–छात्राओं के लिए सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक, अंचल कार्यालय, जयपुर

हिन्दी माह एव राजभाषा समारोह का आयोजन।

पंजाब एण्ड सिंध, अंचल कार्यालय जयपुर द्वारा दिनांक 01 सितम्बर से 30 सितम्बर 2021 तक हिंदी मिलन समारोह का आयोजन किया गया । इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता रहे स्टाफ सदस्यों को पुरस्कृत किया गया ।

हिन्दी का सरलीकरण ! क्यूँ ?

भारत एक बहुभाषिक राष्ट्र है। यहाँ के बारे में कहा ही जाता है कि यहाँ 'चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर बानी'। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार अष्टम अनुसूची के अतिरिक्त भी ऐसी 121 भाषाएँ भारत में प्रचलित हैं जो कि दस हजार या उससे अधिक लोगों द्वारा बोली और समझी जाती हैं। इन सभी प्रादेशिक भाषाओं का अपना व्याकरण है, लिपि है और समृद्ध साहित्य भी है। इनमें से बहुत सारी भाषाओं जैसे मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगू, मलयालम, कन्नड़, पंजाबी इत्यादि को तो अपने–अपने प्रदेश की राज्य भाषा का दर्जा भी प्राप्त है। पर इन राज्यों से कभी भी इन भाषाओं को सरल बनाए जाने की मांग कभी नहीं उठी है। तो फिर हिन्दी के सरलीकरण को लेकर गाहे–बगाहे उठने वाली मांग के पीछे कारण क्या है ?

अंग्रेजी विरासत :

दरअसल जब भी राजभाषा विभाग या इससे जुड़े कार्मिक इसे पूर्ण रूप से काम–काज की भाषा बनाने को लेकर ज़ोर देने लगते हैं, तब अंग्रेजीदाँ कर्मचारी वर्ग और हिन्दीतर भाषी क्षेत्र पहले हिन्दी को सरल बनाने की माँग करने लगते हैं। कुछ हद तक हिन्दीतर भाषी क्षेत्र के लोगों की यह माँग वाजिब भी लगती है क्यूंकि उन्हें हिन्दी सीखना 'क''ख' से शुरू करना होता है। पर हिन्दी भाषी क्षेत्र से भी ऐसी आवाज आती है तो इसके पीछे के कारण को समझना नितांत आवश्यक हो जाता है। चूंकि हमने आजादी के बाद अंग्रेजों की ही प्रशासनिक व्यवस्था को विरासत में ग्रहण किया था, इसलिए हमें अंग्रेजी की शब्दावली, अर्थ, अवधारणाएँ, कानून, परम्पराएँ या यूं कहें कि पूरी की पूरी व्यवस्था ही अंग्रेज़ियत से लबरेज मिली थी। इसलिए वर्षों तक उसी शब्दावली और पहले से तैयार मसौदों का प्रयोग कर हम अंग्रेजी के भी आदी होते गए हैं और इसी का परिणाम है कि अब जब भी हिन्दी में काम करने की बारी आती है, हमें हिन्दी में भी ऐसे शब्द चाहिए जो दिखें हिन्दी में लेकिन अर्थ अंग्रेजी का दें। अब हर भाषा की अपनी एक अलग शब्दावली और अर्थ–संपदा होती है। एक भाषा में जैसे बात कही गई है, उसी वाक्य–विन्यास में दूसरी भाषा में भी कही जाए, ये संभव नहीं है। किन्तु, हिन्दी को राजभाषा के रूप में व्यवहार्य में लाने के लिए अंग्रेजी के पूर्व–प्रचलित शब्दों का प्रयोग कर ऐसी कृत्रिम हिन्दी का निर्माण कर दिया गया जो एक प्रकार का बनावटीपन लिए थी और ये लंबे समय तक प्रयोज्य बनने लायक स्थिति थी ही नहीं।

भाषा में कठिनता की भ्रांति :

हम सभी इस बात से सहमत होंगे कि जो लोग अपना सम्पूर्ण पत्र–व्यवहार अंग्रेजी में करने में शान समझते हैं, उन सहित हम सभी लोग लोक व्यवहार में बोलने में आज भी 95% हिन्दी का ही प्रयोग करते हैं। प्रसिद्ध लेखक कमलेश्वर कहते हैं, "हम भारतीय केवल दो मिनट की अंग्रेजी बोलते हैं, तीसरे–चौथे मिनट में हम हिन्दी या अपनी मातृभाषा पर आ ही जाते हैं।" कुछ–एक को छोड़ दिया जाए तो ये बात बिलकुल सत्य प्रतीत होती है, यकीन न हो तो कभी आज़मा कर देख लें। फिर,वही लोग जब काम–काज के दौरान इसके कठिन होने की शिकायत करते हैं, तो समझना जरूरी हो जाता है कि ऐसा क्यूँ ? वस्तुतः भाषा में कठिनता दो प्रकार से आती है, पहली तो हमारे लिए अर्थ ही जटिल हो। जैसे– धर्मशास्त्र, विधिक नीति–नियम, तकनीकी शब्दावली के शब्द जो कि

विषय–विशेषज्ञों से इतर सामान्य व्यक्ति के लिए जटिल ही रहेंगे। दूसरी, शब्दों को प्रयोग में न लाने की वजह से उत्पन्न कठिनता– जैसे प्रबंधक, शाखा प्रमुख, अर्जित अवकाश, सतर्कता, निरीक्षण इत्यादि शब्द किसी समय प्रयोग में नहीं थे, तो कठिन लगते थे, पर शनै–शनै ही सही अब ये हमें अटपटे या कठिन नहीं लगते हैं। सीधी सी बात है, शब्द जो व्यवहार में लाएँगे, तो आसान हो जाएंगे, नहीं तो कठिन ही रहेंगे। पर बचपन में "responsibility" को चार भागों में विभक्त कर बड़ी मुश्किल से रट्टा लगाने वालों को अब "उत्तरदायित्व" बहुत ही जटिल लगता है, हालांकि इसके लिए भी 'ज़िम्मेदारी' जैसा आसान शब्द हिन्दी की शब्दावली में है, पर हिन्दी के जो शब्द आज भी अप्रचलित हैं, उनके लिए यह मांग उठती है कि क्यूँ न इनके अंग्रेजी से लिप्यंतरण उठा लिए जाएँ। हिन्दी के प्रगामी प्रयोग में फौरी तौर पर वृद्धि करने के लिए मान लेते हैं कि चलो ये भी ठीक है, पर सवाल ये उठता है कि कब तक ? क्या इनसे बनी कृत्रिम भाषा के सहारे हम हिन्दी में मौलिक दस्तावेज़ / मसौदे तैयार कर पाएंगे? इसमें संदेह ही है।

अनुवाद की आदत :

कटु है, किन्तु सच है कि आज भी अधिकांश कार्यालयों में यह परम्परा है

कि अंग्रेजी में पत्र/परिपत्र बनाने के बाद उसे अनुवाद के लिए भेज दिया जाता है और बाद में हिन्दी अनुवाद जारी किया जाता है। अगर साथ में जारी भी हो रहे हैं तो भी ये मौलिक परिपत्र कम और ज्यादातर अनूदित ही होते हैं। यह सही है कि भाषा एक माध्यम है और इसे विचारों और भावनाओं को एक भाषा से दूसरी भाषा में ले जाने में समर्थ होना ही चाहिए। एक तथ्य यह भी है कि बहुत सी किताबों के अनुवाद मूल पुस्तक से ज्यादा लोकप्रिय भी हुए हैं। किन्तु उन लेखकों ने शाब्दिक अनुवाद न कर, मूल पुस्तक के भावों को पाठकों तक पहुंचाया। पर ये हर किसी के बस की बात नहीं है। यांत्रिक अनुवाद भले ही कितने भी सशक्त क्यूँ न हो जाएँ, भाषा कोई यांत्रिक वाहन नहीं है कि यहाँ से माल उठाकर वहाँ रख दिया। शब्दावली, अर्थ–संपदा और वाक्य–विन्यास की शैली के अतिरिक्त हर भाषा का अपना संस्कार भी होता है। जैसे–Mahatma Gandhi is India's father of the nation का सही हिन्दी अनुवाद 1. 'महात्मा गांधी भारत का राष्ट्रपिता है' न होकर 2. 'महात्मा गांधी भारत के राष्ट्रपिता है' होगा। क्यूंकि गांधीजी हमारे देश के लिए आदरणीय हैं और दूसरे वाक्य में उनके प्रति सम्मान प्रकट हो रहा है पर अंग्रेजी वाक्य को पढ़ने से ऐसी कोई भावना नहीं जागृत होती है। ये भाषाई संस्कार ही है जो प्रत्येक भाषा को अलग बनाते हैं।

संस्कृतनिष्ठता का आरोप :

अक्सर लोग हिन्दी पर संस्कृतनिष्ठ होने का आरोप लगाते हैं कि इसके चलते हिन्दी क्लिष्ट हो जाती है। पर राजभाषा में संस्कृतनिष्ठ शब्दों की अधिकता का दूसरा पक्ष यह है कि हिन्दी की अपेक्षा बांग्ला, असमिया, उड़िया, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं में संस्कृत के शब्द हिन्दी से कहीं अधिक है। हिन्दी में संस्कृत शब्दों से इन प्रदेशों को कठिनता का वैसा अहसास नहीं होता है, जैसा हिन्दी भाषियों को होता है। ऐसे में अगर हम दक्षिण भारत के राज्यों में हिन्दी के प्रसार का सपना देखते हैं तो हमें हिन्दी के इसी संस्कृतनिष्ठ स्वरूप को बनाए रखना होगा। दूसरा हिन्दी की भाषिक परम्परा ही संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश की है। अतः इसमें संस्कृत शब्दों का प्रयोग स्वाभाविक है पर अंग्रेजी के शब्दों की घालमेल इसे कृत्रिमता की ओर ही ले जाएगी।

निष्कर्ष :

असल में, हिन्दी के सरलीकरण की मांग के लिए न तो संस्कृतनिष्ठ शब्द जिम्मेदार हैं, न ही इसका कोई अन्य कारण नजर आता हैं, तो बस एक मानसिकता कि किसी प्रकार से हिन्दी टंकण और प्रयोग से बचा जा सके और दूसरा हिन्दी में मूल रूप से काम होने की बाध्यता न होने के चलते इसके प्रयोग में कमी होना। इसके चलते संवैधानिक कर्तव्यों की खानापूर्ति के लिए अनुवाद की बैसाखी के सहारे एक ऐसी भाषा विकसित की जा रही है जो अंग्रेजी को देखकर गढ़ी जा रही है। शब्द से लेकर वाक्य–रचना तक हर जगह अंग्रेजी का बहुत दबाव है। बहुधा आपको राजमार्ग परे work in progress के नीचे अनूदित वाक्य "कार्य प्रगति पर है" लिखा हुआ मिलेगा जबकि हिन्दी में कार्य का प्रगति पर होना कोई मुहावरा है ही नहीं । आम बोल–चाल में हम इसके लिए 'काम चालू है' या 'काम चल रहा है' ही कहते हैं। पर अंग्रेजी शिक्षितों की बढ़ती संख्या के साथ–साथ हिन्दी के शब्द और वाक्य विन्यास को अंग्रेजी की तर्ज पर ढालने की मनोवृत्ति बढ़ती जा रही है। एक ऐसी सोच का ताना–बना हमारे इर्द–गिर्द बना दिया गया है कि हिन्दी ऐसी होनी चाहिए कि अंग्रेजीदा लोग–बाग भी इसे आसानी से समझ लें और यहीं से हिन्दी में अंग्रेजी की मिलावट से हिंग्लिश का जन्म होता है जो राजभाषा के संवैधानिक प्रावधानों के राजमार्ग पर चलने की बजाय पतली गली से निकल लेती है और हम द्विभाषिकता के उसी दुराहे पर एक बार फिर खड़े मिलते हैं जहां से हम आजादी के बाद से चले थे।

भाषा सीखने या भाषा विशेष में काम करने का कोई सस्ता विकल्प नहीं होता है। तीन–चार पंक्तियों के अंग्रेजी मिश्रित तैयार मसौदों के सहारे न तो हम हिन्दी में अपेक्षित काम कर सकते हैं और न ही इसे सीख सकते हैं। किसी भाषा को जानने, समझने और इस्तेमाल करने के लिए हमें उस भाषा की शब्दावली, व्याकरण और वाक्य–विन्यास को सीखना ही होता है। अगर हम वास्तव में हिन्दी में काम करना चाहते हैं तो हमें हिन्दी के उपयोग और अभ्यास को अपनी आदत में लाना ही होगा। धीरे–धीरे हिन्दी खुद–ब–खुद सरल लगने लगेगी और सरलीकरण की मांग हवा हो जाएगी।

जयपाल सिंह शेखावत
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

मेरी मां के सपने

राधिका को आज उठने में देरी हो गई। अलार्म को तीन बार स्नूज करने के बाद आखिरकार वह उठ ही गई । उठते ही वह जल्दी से रसोई में गई और अपनी बेटी और पति के लिए नाश्ता बनाने लगी। थोड़ी देर में राधिका का पति उठा और फिर उसकी बेटी कुसुम । पति को खिलाकर राधिका ने उसका टिफिन पैक किया और दफ्तर के लिए विदा किया। पीछे से कुसुम अंगड़ाई लेते हुए आई और अपनी मां की तरफ रोनी सी सूरत बना कर कहा, "मम्मी आज स्कूल नहीं जाना।" राधिका अपने बेटी के पास बैठी और उसके कमीज का बटन लगाते हुए कहा, "बेटी स्कूल नहीं जाओगी, तो बड़ी आदमी कैसे बनोगी ?" इस पर कुसुम ने कहा – "आप भी तो स्कूल गईं, पढ़ाई की, फिर आप क्यों नहीं बनी बड़ी आदमी ?" राधिका को यह सुनकर थोड़ा धक्का सा लगा। उसने कुसुम को किसी तरह स्कूल भेजा और फिर अपने बचपन की यादों में खो गई। किस तरह उसकी मां ने उसे अपने सपनों के सहारे एक नाले के पास पाइप के अंदर रह कर बड़ा किया। रोज ही उनको पानी के टैंकर के पास घंटों लाइन में खडे रहने के बाद पानी मिलता था। अक्सर कुसुम ही इस काम के लिए जाती थी, क्योंकि मां को घरों में काम करने जाना होता था। रोज पानी लाने में 4 घंटे का समय लग जाता था, जिससे कुसुम पढाई और अपने ऊपर ध्या न नहीं दे पाई। बड़ी होने के बाद कुसुम गृहस्थी में लग गई। पूरे दिन वो इसी ख्यालों में खोई रही । दिन में कुसुम स्कूल से वापस आई और आते ही राधिका से चिपक गई। कुसुम ने कहा, " मॉ कितना अच्छा खाना बनाया था तुमने, मेरे सारे दोस्त तारीफ कर रहे थे । सबने कहा कि मेरी मां बहुत अच्छा खाना बनाती है मां तुम हमेशा मेरे पास रहना और ऐसे ही मेरा ध्यान रखना।"राधिका का मन एकदम से हल्का हो गया और वह यह सुनकर बहुत खुश हुई । उसने राधिका को अपने बचपन की दिक्क तों के बारे में बताया और पानी के महत्वक के बारे में भी बताया । राधिका को तभी समझ आ गया कि मां से बढ़कर एक इंसान और कुछ नहीं बन सकता।

सपनों का मेडागास्कर

सात साल की प्यारी रुचि आज बहुत खुश थी। सिनेमा थिएटर में मेडागास्कर चलचित्र जो देख कर आई थी। जब से आई थी, खुद को एक शेर समझ कर, घर में धमाचौकड़ी मचा रही थी। माँ ने बहुत कहा कि रुचि चुपचाप खाना खा कर सो जाओ, लेकिन रुचि जैसे किसी और ही दुनिया में थी। आखिर थक कर सो ही गयी। अगले दिन विद्यालय से आने के बाद, रुचि ने खाना खाया और निकल गयी पार्क में झूला झूलने। सुबह की बारिश से मैदान गीली थी। बारिश की पानी से पोषित होकर पेड़ पौधे भी ज्यादा हरे दिख रहे थे। पार्क में लोहे के बने जानवरों की प्रतिमाएँ थीं। खेलते खेलते रुचि खुद की मेडागास्कर की दुनिया में पहुँच गयी। रुचि खुद एक शेर थी। पार्क में लगे जानवरों की प्रतिमाएँ उसकी दुनिया मैं जीवंत हो उठे। रुचि उनके साथ मेडागास्कर की दुनिया मैं खो गयी। पार्क मैं बच्चों के चढ़ने के लिए बनी सीढ़ी रुचि की कल्पना में एक विशालकाय पहाड़ बन गया। रुचि और उसके जानवर साथी इस पहाड़ पर चढ़ कर, उसे अपना गढ़ बनाने में लग गए। बीच में काफी मुसीबतें आयीं। कभी दूसरे बब्बर शेर ने रुचि को ललकारा तो कभी चट्टान टूट कर गिरने लगे। कभी शिकारियों का सामना तो कभी तूफान का सामना। इन सब से लड़ते हुए रुचि और उसके साथी पहाड़ के शिखर पर पहुँच ही गए। रुचि अपने साथियों के साथ जश्न मना ही रही थी कि तभी आवाज आयी "रुचि, बेटा अंधेरा होने को गया, घर आ जाओ"। रुचि की माँ उसे लेने आ गयी थी। "माँ बस थोड़ी देर और" रुचि ने कहा। माँ ने अपने हाथों से रुचि को सीढ़ी से उतारा और गोद में लेकर चल पड़ी। रुचि ने हाथ हिलाते हुए अपने सभी जानवर साथियों को अलविदा कहा और कल फिर आने का वायदा किया, मेडागास्कर के एक नए सफर पर चलने के लिए।

नीतीश कुमार चौधरी
प्रबंधक, विश्वकर्मा
औद्योगिक क्षेत्र शाखा, सिडबी जयपुर

ग्रामीण कृषि विकास में बैंकों की भूमिका

किसी भी राष्ट्र के निर्माण में, उसके विकास में उस देश के बैंकों की एक अहम भूमिका है। यह भूमिका और भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाती है जब देश के विकास के साथ कृषि विकास भी जुड़ा हो क्योंकि भारत जैसे विशाल कृषि प्रधान और विविधता वाले देश में जिस की बहुसंख्यक आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है और उनके जीवन यापन के लिए परोक्ष और प्रत्यक्ष रूप से कृषि ही एकमात्र साधन है तो ऐसे में ग्रामीण किसानों के लिए ऋण संबंधी जरूरतों के लिए एकमात्र जरिया होते बैंक हैं, जो किसी जादुई चिराग से कम नहीं क्योंकि वहां उनकी ऋण संबंधी समस्याओं का और आवश्यकताओं का निराकरण किया जाता हैं। आजादी के बाद ग्रामीण विकास में बैंकिंग को एक नई दिशा मिली और इस दिशा में कई महत्वपूर्ण कार्य हुए। 1970 में भारतीय रिजर्व बैंक ने ग्रामीण बैंक से संबंधित बैंकों में प्रचलित परिचालन संबंधी पद्धतियों रीति–नीतियों एवं प्रक्रियाओं की विस्तृत समीक्षा एवं अध्ययन किया तथा इन रीति और नीतियों को युक्तिसंगत रूप से अपनाने संबंधी दिशा निर्देश सभी वाणिज्यिक एवं अन्य बैंकों को जारी किए। बैंकों के माध्यम से ना केवल ग्रामीण इलाकों का विकास हुआ बल्कि देश का भी संपूर्ण विकास हुआ और गांव की आर्थिक उन्नति का विस्तार हुआ और इसके साथ ही असमान वितरण बैंकिंग प्रणाली को देश के अंदर तक प्रसारित करने के लिए ग्रामीण को आसान और सरल किस्तों पर इनकी सुविधाएं उपलब्ध कराई गई। इसके अलावा किसान क्रेडिट कार्ड, स्वयं सहायता समूह को ऋण और वित्त पोषण देना, फसलों की बीमा संबंधी सुविधाएं ,बैंकों की और स्थानीय संस्थाओं की मदद से गांवों में लघु कृषि उद्योगों को प्रसारित करना भी शामिल हैं ।

बैंकों के राष्ट्रीयकरण के समय 23 प्रतिशत शाखाएं ग्रामीण क्षेत्रों में थीं, वर्तमान में 51 प्रतिशत शाखाएं ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित की गई हैं। भारत की बैंकिंग प्रणाली द्वारा ग्रामीण विकास के क्षेत्र में की जा रही प्रगति का उल्लेख निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता हैं ।

(1) राष्ट्रीय कृषि तथा ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) देश में कृषि तथा ग्रामीण विकास हेतु वित्त उपलब्ध कराने वाली शीर्षस्थ संस्था हैं । इसकी स्थापना 12 जुलाई, 1982 को की गई हैं । नाबार्ड की कुल पूँजी में भारत सरकार तथा रिजर्व बैंक का बराबर (50-50) का योगदान था। आगामी 5 वर्षों के दौरान उसे बढ़ाकर 2000 करोड़ रुपए करने का प्रस्ताव था । नाबार्ड ग्रामीण ऋण ढाँचे में एक शीर्षस्थ संस्था के रूप में अनेक वित्तीय संस्थाओं को पुनर्वित्त सुविधाएं प्रदान करता है जो ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादन गतिविधियों के विस्तृत क्षेत्रों को बढ़ावा देने के लिए ऋण देती हैं। अपनी ऋण सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नाबार्ड भारत सरकार, विश्व बैंक तथा अन्य एजेन्सियों से धन राशियाँ प्राप्त करता है। नाबार्ड द्वारा वाणिज्यिक बैंकों तथा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को पुनर्वित्त सहायता के रूप में ऋण उपलब्ध कराए जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप ये बैंक, लघु, सिंचाई समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम, डेरी विकास, फार्म यन्त्रीकरण आदि के अन्तर्गत दिए जाने वाले ऋणों के साथ–साथ अपनी विभिन्न प्रकार की गतिविधियों को चालू रख सकते हैं ।

(2) क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक (RRBs): समाज के कमजोर वर्ग विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों तथा कारीगरों को संस्थागत उधार उपलब्ध कराने के लिए देश में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की स्थापना की गई हैं ।ये बैंक सिक्किम तथा गोआ को छोडकर समस्त राज्यों में कार्यरत हैं ।भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को ऋण धारकों पर ब्याज दर स्वतन्त्रतापूर्वक निर्धारित करने की छूट प्रदान कर दी गई हैं ।

(3) भूमि विकास बैंक (LDB): किसानों को भूमि खरीदने, भूमि पर स्थायी सुधार करने अथवा पुराने ऋणों का भुगतान करने आदि से सम्बन्धित वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भूमि विकास बैंक की स्थापना की गई है। यह बैंक किसानों की अचल सम्पत्ति को बन्धक रखकर दीर्घकालीन (25 वर्ष तक के) ऋणों की व्यवस्था करते हैं । इन बैंकों का ढ़ाचा द्विस्तरीय होता है, राज्य स्तर पर केन्द्रीय भूमि विकास बैंक तथा जिला अथवा तालुक स्तर पर प्राथमिक भूमि विकास बैंकों की स्थापना की गई है।

निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर ग्रामीण विकास में बैंकों की भूमिका की सार्थकता का सिंहावलोकन कर सकते हैं –

(1) खाद्यान्न में आत्मनिर्भरता– 'नाबार्ड' के नेतृत्व में कृषि एवं ग्रामीण साख उपलब्ध कराने में कार्यरत विभिन्न प्रकार के बैंकों, यथा–भूमि विकास बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, सहकारी बैंक तथा व्यापारिक बैंकों द्वारा अधिक उपज वाली किस्मों के बीजों, रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, भूमि सुधारक तत्वों, आधुनिक कृषि यन्त्र, ट्रेक्टरों, थैशरों, इन्जनों, क्रॉपिंग मशीनों, फिल्टर पाइन्टो, स्टेबलाइजर तथा अन्य कृषि उपयोगी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों तथा सिंचाई के साधन ट्यूबबैल, पम्पसेट इत्यादि हेतु ऋण उपलब्ध कराए जाने का ही परिणाम है कि भारतीय किसान कृषि की नवीन तकनीक की ओर आकर्षित हुए हैं तथा इनका उपयोग करने लगे हैं । बैंकों द्वारा संचालित इन कृषि एवं ग्रामीण ऋण योजनाओं का ही परिणाम है कि निरन्तर बढ़ती जनसंख्या के बावजूद भी खाद्यान्न उत्पादन के क्षेत्र में हमने आत्मनिर्भरता प्राप्त की है तथा हरितक्रान्ति से आगे बढ़कर कृषि जिन्सों के निर्यातक देशों की श्रेणी में पहचान बनाई है ।

(2) रोजगार में बढ़ोत्तरी–ग्रामीण क्षेत्रों की सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी की है, जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्र की अधिकतम क्षमता का उपयोग नहीं हो पाता फलस्वरूप ग्रामीण व्यक्ति तो निर्धन बने ही रहते हैं, देश भी कमजेर रहता है ।गाँवों में व्याप्त मौसमी स्थायी, अर्द्ध शिक्षित तथा बेरोजगारी के निवारण हेतु बैंकों द्वारा अनेक कार्यक्रम प्रारम्भ किए गए हैं ।1978–79 में भारत सरकार के द्वारा प्रारम्भ किए गए 'समेकित ग्रामीण विकास कार्यक्रम' (IRDP) के संचालन में बैंकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है. इसके अतिरिक्त युवा ग्रामीण बेरोजगारी को स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षण प्रदान करने वाली योजना 'ट्राइसेम' (TRYSEM) के तहत प्रशिक्षण प्रदान करने वाली संस्थाओं को भी बैंकों द्वारा वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाती है। इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए भी बैंक, पशुपालन, मुर्गीपालन, मत्स्य पालन, डेरी विकास, बागवानी व अन्य कुटीर उद्योग धन्धों के लिए रियायती ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराते हैं । बैंकों के सहयोग से प्रारम्भ की गई कुटीर उद्योगों के विकास की परियोजनाओं से कृषि पर जनसंख्या के दबाव में कमी आई हैं ।

(3) भूमिहीनों की समस्या का हल– गाँवों में भूमि ही उत्पादन तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य साधन है। भूमि के असमान वितरण को सन्तुलित करने के लिए सरकार द्वारा सीलिंग कानून लाया गया जिसके द्वारा गरीब भूमिहीन जनता को अतिरिक्त भूमि का वितरण किया गया । सीलिंग कानून के अन्तर्गत जो जमीन आवंटित की जाती है वह प्रायः निम्न कोटि की होती है । इससे अच्छी उपज लेने के लिए अधिक धनराशि खर्च करनी पड़ती है जो इस वर्ग के लोगों के पास उपलब्ध नहीं होती है। अतः सरकार ने इन वर्गों के लोगों के पास संसाधनों की कमी को देखते हुए बैंकों के माध्यम से 25,000 रुपए प्रति हेक्टेअर की दर से वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई है । फलस्वरूप भूमिहीनों को भी चहुमुखी उन्नति का अवसर मिला है ।

(4) आर्थिक एवं सामाजिक सन्तुलन की स्थापनाः भारतीय रिजर्व बैंक के एक सर्वेक्षण के अनुसार 10 प्रतिशत ग्रामीण कृषक ऐसे हैं जो महँगे कृषि यन्त्रों तथा आधुनिक कृषि–प्रणाली के व्यय को वहन कर सकते हैं । अधिकांश कृषक जिनके पास छोटे कृषि फार्म हैं वे आधुनिक कृषि यन्त्रों की प्रणाली की लागत तथा रखरखाव के व्यय को वहन नहीं कर पाते हैं । इनके लिए कम ब्याज दर पर निर्धन कृषकों को कृषि के लिए उपयोगी सामग्री हेतु ऋण उपलब्ध कराने से ग्रामीण समाज में व्याप्त असमानता और असन्तुलन को दूर करने में भी बैंक सराहनीय भूमिका निभाते हैं ।

पुष्पेंद्र सिंह बिष्ट, वरिष्ठ प्रबंधक,
इंडियन बैंक, अंचल कार्यालय, जयपुर

हक

जिस पर अपना हक होता है उसे ही तो कुछ कहा जाता है
बाकी सब से तो बस डरा ही जाता है,
खुशी मनाओ इस बात की,
कोई टोकने वाला तो है,
वरना बेकार लोगों को तो आवारा ही बोला जाता है,
अपनापन जहाँ हो वहीं अधिकार समझा जाता है,
बेकार है वो रिश्ते जहाँ चुप–चाप रहा जाता है,
अपनी भावना को उजागर करने का हक जहां होता है,
वहीं पर रिश्तों को अभिमान कहा जाता है,
डर–डर कर रहने वाले मकान को कहाँ घर कहा जाता है
घरौंदा बन कर रह जाता है खाली–खाली सा,
जहाँ चुपचाप रहा जाता है।
जिस पर हक होता है उसे ही तो कुछ कहा जाता है,,,,
इन अपनेपन वाली बातों को आजकल कहां समझा जाता है,
आधुनिकता के इस दौर में इसे आजादी में खलल ही माना जाता है,
शनैः शनैः सब छूटता जाता है और संस्कारों का दम?
इन सब संस्कारी बातों से फर्क किसे पड़ता है?
बस रह–रह कर रिश्तों का दामन छूटता चला जाता है,
परिवार के बुजुर्गों की आवाज दबाकर बस,
उनकी खुशियों को ही तो मारा जाता है,
जिस पर हक होता है उसे ही तो कुछ कहा जाता है।।

श्रेया शर्मा
सहायक प्रबंधक
इंडियन बैंक, मानसरोवर शाखा, जयपुर

बढ़ते एनपीए (NPA) का भारतीय मार्केट पर प्रभाव

एनपीए आखिर है क्याः

सामान्यतः ऐसा कोई भी आस्ति (एसेट) जिससे बैंक को आय आना बंद हो गई है, उसे अनर्जक आस्ति (एनपीए) कहा जाता है। जब किसी ऋण या अग्रिम के मूलधन और ब्याज की किश्त के भुगतान में 90 दिनों से अधिक की देरी हो जाती है तो उस ऋण या अग्रिम को अनर्जक आस्ति की श्रेणी में रखा जाता है। आरबीआई द्वारा कुछ मुख्य प्रकार के ऋणों के एनपीए होने के मानदंड निम्नवत निर्धारित हैं:

1. टर्म लोनः ब्याज और–अथवा मूलधन की किश्त यदि 90 दिनों से अधिक की अवधि के लिए अतिदेय है।
2. ओवरड्राफ्ट/नकद क्रेडिट (ओडीसीसी): यदि खाता 90 दिनों से अधिक की अवधि के लिए 'अनियमित' रहता है,
3. बिलः यदि खरीदे एवं डिस्काउंट किए गए बिलों के मामले में बिल 90 दिनों से अधिक की अवधि के लिए अतिदेय रहता है ।
4. फसल ऋणः कम अवधि की फसल के लिए दो फसल सीजन तथा लंबी अवधि के लिए एक फसल सीजन तक यदि मूलधन और अथवा ब्याज का भुगतान बकाया हो।

एनपीए की श्रेणियांः बैंकों को गैर–निष्पादित आस्तियों को उस अवधि के आधार पर निम्नलिखित तीन श्रेणियों में वर्गीकृत करने की आवश्यकता है, जिसके लिए परिसंपत्ति गैर–निष्पादित रही है ।

1. अवमानक आस्तियां (उप–मानक संपत्ति):–एक अवमानक आस्ति वह थी जिसे दो वर्ष से अनधिक अवधि के लिए एनपीए के रूप में वर्गीकृत किया गया था। 31 मार्च 2001 से, एक अवमानक परिसंपत्ति वह है, जो 18 महीने से कम या उसके बराबर की अवधि के लिए एनपीए बनी हुई है। ऐसे मामलों में, उधारकर्ता गारंटर की वर्तमान निवल संपत्ति या चार्ज की गई सुरक्षा का वर्तमान बाजार मूल्य बैंकों को देय राशि की पूर्ण वसूली सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त नहीं है। दूसरे शब्दों में, इस तरह की संपत्ति में अच्छी तरह से परिभाषित ऋण कमजोरियां होंगी जो ऋण के परिसमापन को खतरे में डालती हैं और इस विशिष्ट संभावना की विशेषता होती है कि यदि कमियों को ठीक नहीं किया गया तो बैंक कुछ नुकसान उठाएंगे।

2. संदिग्ध संपत्तिः–एक संदिग्ध संपत्ति वह है जो दो साल से अधिक की अवधि के लिए एनपीए बनी रहती है। 31 मार्च 2021 से, एक परिसंपत्ति को संदिग्ध के रूप में वर्गीकृत किया जाना है, यदि वह 18 महीने से अधिक की अवधि के लिए एनपीए बनी हुई है। संदिग्ध के रूप में वर्गीकृत ऋण में संपत्ति में निहित सभी कमजोरियां होती हैं जिन्हें उप–मानक के रूप में वर्गीकृत किया गया था, अतिरिक्त विशेषता के साथ की कमजोरियां पूर्ण रूप से संग्रह या परिसमापन करती हैं – वर्तमान में ज्ञात तथ्यों, शर्तों और मूल्यों के आधार पर – अत्यधिक संदिग्ध और असंभव।

3. हानि संपत्तिः–एक हानि संपत्ति वह है जहां बैंक या आंतरिक या बाहरी लेखा परीक्षकों या आरबीआई निरीक्षण द्वारा नुकसान की पहचान की गई है, लेकिन राशि पूरी तरह से बट्टे खाते में नहीं डाली गई है। दूसरे शब्दों में, ऐसी संपत्ति को असंग्रहणीय और इतने कम मूल्य का माना जाता है कि एक बैंक योग्य परिसंपत्ति के रूप में इसकी निरंतरता की गारंटी नहीं है, हालांकि कुछ बचाव या वसूली मूल्य हो सकता है।

एनपीए के संदर्भ में आरबीआई के दिशानिर्देशः आरबीआई ने एनपीए को वित्तीय रूप से घटाने के लिए 'बैंकों की बैलेंस शीट की सफाई' की दिशा में एक कदम बढ़ाया। लेकिन, अर्थव्यवस्था पर इस प्रावधान के लागू होने का समग्र प्रभाव अत्यंत प्रतिकूल रहा है। जिन बैंकों के खातों को गैर–निष्पादित के रूप में स्पष्ट किया गया है, उनमें कॉरपोरेट, उद्योग, सूक्ष्म, लघु और मध्यम व्यवसाय, व्यापारी और निर्यातक शामिल हैं जो न केवल देश की संपत्ति और जीडीपी उत्पन्न करते हैं बल्कि देश में 200 मिलियन से अधिक लोगों को रोजगार भी प्रदान करते हैं। इस प्रकार पूरी अर्थव्यवस्था देश की जीडीपी वृद्धि हासिल करने, प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने और गरीबी उन्मूलन के लिए इन व्यवसायों पर निर्भर है तो एक तरफ बैंकों के स्वास्थ्य और उनकी सफाई का सवाल है और दूसरी तरफ, देश की अर्थव्यवस्था, जीडीपी विकास और रोजगार की स्थिरता का सवाल है। एक दूसरे के खिलाफ नहीं हो सकता क्योंकि दोनों देश के विकास और समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण हैं। बैंक अपनी स्थापना के समय से ही सभी प्रकार के उधारकर्ताओं को उधार देते रहे हैं क्योंकि उधार उनके मुख्य उद्देश्यों में से एक है। ऐसे लगभग सभी उधार आम तौर पर उधारकर्ताओं की व्यक्तिगत गारंटी सहित प्राथमिक और संपार्श्विक प्रतिभूतियों को लेकर सुरक्षित होते हैं। इसलिए, कुल मिलाकर, बैंकों के उधार को मूर्त और अमूर्त प्रतिभूतियों और गारंटियों द्वारा सुरक्षित माना जाता है। अंतर्राष्ट्रीय बैंकों द्वारा समर्थित और भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा भारतीय बैंकों के लिए लाए गए ऋणों को एनपीए के रूप में वर्गीकृत करने के प्रावधान ने संपूर्ण वित्तपोषण प्रतिध्वनि प्रणाली में एक अराजक स्थिति पैदा कर दी है और यह भारत में धन और रोजगार का सबसे बड़ा विध्वंसक साबित हो रहा है। एनपीए वर्गीकरण मानदंड सुरक्षा, तरलता और निवेश पर वापसी' के उधार के मूल बुनियादी सिद्धांतों में से कभी नहीं रहा है। यह सर्वविदित है कि किश्तों और ब्याज के पुनर्भुगतान में देरी कई कारणों से हो सकती है– वास्तविक या नहीं, लेकिन एनपीए का मुद्दा ऋणदाता–उधारकर्ता संबंधों के अन्य सभी सिद्धांतों से आगे निकल गया है, जिसके कारण बड़ी संख्या में व्यवसायों को वर्गीकृत किया जा रहा है। 'गैर–निष्पादक' के रूप में उन्हें 'अछूत' बना दिया। एक बार एनपीए घोषित होने के बाद, वे अनुग्रह से गिर जाते हैं और अपने साथियों और बैंकिंग समुदाय के बीच कलंक को ढोते हैं, जिससे उनके लिए अपना खोया हुआ गौरव वापस पाना बेहद मुश्किल हो जाता है।

जब से वर्तमान एनपीए मानदंडों को 2013 से लागू किया गया है इसके दुष्प्रभावों ने सभी हितधारकों यानी बैंकों, कंपनियों, एमएसएमई, निर्यातकों और अन्य सभी व्यवसायों पर एक छाया डाली है जो आर्थिक विकास और रोजगार में योगदान करते हैं। जिन बैंकों के लाभ और स्वास्थ्य के लिए यह प्रावधान पेश किया गया है, वे स्वयं सबसे ज्यादा पीड़ित हैं क्योंकि उनके ऋण देने वाले पोर्टफोलियो के बड़े हिस्से को एनपीए के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जिससे उन्हें नुकसान के लिए प्रावधान करने के लिए मजबूर होना पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप उनकी पूंजी और निवल मूल्य का क्षरण हुआ। इसलिए, सरकार को उनके पुनर्पूंजीकरण के लिए राजकोष से भारी धनराशि खर्च करनी पड़ती है। राजकोष पर यह बोझ अंततः जनता द्वारा करों के माध्यम से वहन किया जाता है। इसलिए बैंकों को नुकसान होता है, जनता को नुकसान होता है, व्यवसायों को नुकसान होता है, देश की अर्थव्यवस्था और जीडीपी को नुकसान होता है और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि रोजगार को भारी नुकसान होता है क्योंकि न केवल चल रहे व्यवसाय रुक जाते हैं या बंद हो जाते हैं, बल्कि एनपीए के डर से, यहां तक कि उच्च क्षमता वाले नए विचार भी आते हैं। जोखिम लेने से बचने के लिए विकास भी कम उष्मशील हो जाता है। दूसरी ओर, बैंक भी नई परियोजनाओं को उधार देने में बहुत रूढ़िवादी हो गए हैं क्योंकि वे भविष्य के नकदी प्रवाह के बारे में गलत तरीके से कारक नहीं बना सकते हैं जो कि ऋण किस्तों और ब्याज देनदारियों को समय पर पूरा करने के लिए पर्याप्त होगा। बैंकर ऋण प्रस्तावों के उचित परिश्रम और पर्याप्त मूल्यांकन का ध्यान रखना और उधार देने के सिद्धांतों का पालन करना सुनिश्चित कर सकते हैं, लेकिन वे उन व्यवसायों के दिन–प्रतिदिन के संचालन की निगरानी नहीं कर सकते जिन्हें वे उधार देते हैं। यह बैंकिंग और व्यवहार्यता के अपने स्वयं के व्यवसाय को नष्ट कर रहा है।

एनपीए मानदंडों का प्रभावः बैंक जो पहले विभिन्न पुनर्गठन योजनाओं के तहत ऐसे कई अनियमित ऋणों को हल कर रहे थे और इस तरह के अतिदेय के एक बड़े हिस्से को पुनर्प्राप्त करने में सक्षम थे, अचानक घाटे को बुक करने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं बचा था क्योंकि आरबीआई ने ऐसी सभी पुनर्गठन योजनाओं को वापस लेने का फैसला किया था। आरबीआई के 90 दिनों के एनपीए मानदंडों को सख्ती से लागू करने के परिणामस्वरूप, बैंकों के एनपीए 2013 से बढ़ने लगे और 10 प्रतिशत से अधिक ऋण हो गए।

उपरोक्त से जो प्रश्न उठता है वह यह है कि क्या हमारी अर्थव्यवस्था और विशेष रूप से बैंकिंग प्रणाली 90 दिनों के एनपीए मानदंडों से लाभ उठा रही है या खो रही है। हमें पेड़ों के लिए जंगल नहीं खोना चाहिए और लोगों की गरीबी और बेरोजगारी को कम करने के लिए भारी धन की आवश्यकता के साथ हमारी बढ़ती अर्थव्यवस्था की जरूरतों को नहीं भूलना चाहिए। केवल अंतरराष्ट्रीय प्रथाओं के अनुरूप होने के लिए, हम संपूर्ण बैंकिंग और वित्तपोषण प्रणाली में सेंध लगाने और अपने देश के आर्थिक विकास में उत्पन्न गति को बाधित करने का जोखिम नहीं उठा सकते हैं। एनपीए मानदंडों ने बिल्कुल वैसा ही किया है। बैंकों ने उधार देना लगभग बंद कर दिया है, आर्थिक विकास धीमा हो गया है और बेरोजगारी दिन–ब–दिन बढ़ती जा रही है। बिना किसी वैध कारण के ऋण पुनर्गठन, कॉर्पोरेट ऋण पुनर्गठन, और संयुक्त ऋणदाता फोरम की व्यवस्था, रणनीतिक ऋण पुनर्गठन और दबावग्रस्त संपत्तियों की सतत संरचना जैसी दबावग्रस्त संपत्तियों के समाधान के लिए भारतीय रिजर्व बैंक के पहले के दिशानिर्देशों को सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए वापस ले लिया गया है। दिवाला और दिवालियापन संहिता की शुरुआत के साथ चल रही कंपनियों के खातों को समाधान के लिए एनसीएलटी अदालतों में भेजा जा रहा है ।

एनपीए का भारतीय मार्केट और अर्थव्यवस्था पर असरः एनपीए हर आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और चालू खाता घाटे में वृद्धि का मुख्य कारण भी है। ब्याज दरें, ऋण, आवास ऋण, सीआरआर, एसएलआर सभी सीधे प्रणाली से प्रभावित होते हैं। कॉरपोरेट्स उच्च एनपीए के प्रभाव को भी प्रभावित करते हैं।
बैंकिंग क्षेत्र में तनाव के कारण अन्य परियोजनाओं को निधि देने के लिए कम धन उपलब्ध होता है, इसलिए, बड़ी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। लाभ मार्जिन बनाए रखने के लिए बैंकों द्वारा उच्च ब्याज दरें। अच्छी परियोजनाओं से खराब परियोजनाओं के लिए धन पुनर्निर्देशित करना। जैसे–जैसे निवेश अटका हुआ है, इसके परिणामस्वरूप बेरोजगारी हो सकती है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के मामले में, बैंकों के खराब स्वास्थ्य का मतलब एक शेयरधारक के लिए खराब रिटर्न है, जिसका अर्थ है कि भारत सरकार को लाभांश के रूप में कम पैसा मिलता है। इसलिए यह सामाजिक और बुनियादी ढांचे के विकास के लिए धन की आसान तैनाती और सामाजिक और राजनीतिक लागत में परिणाम को प्रभावित कर सकता है–

भारतीय विशेषताओं की बैलेंस शीट सिंड्रोम, जो कि बैंक और कॉर्पोरेट क्षेत्र दोनों हैं, ने बैलेंस शीट पर दबाव डाला है और निवेश के नेतृत्व वाली विकास प्रक्रिया को रोक दिया है। एनपीए से जुड़े मामले न्यायपालिका के पास पहले से लंबित मामलों पर अधिक दबाव डालते हैं।

चालू खाता घाटा में वृद्धिः चालू खाते के घाटे में वृद्धि का यह मुख्य कारण है और ब्याज दरें, सीआरआर, एसएलआर प्रणाली से सीधे प्रभावित होती हैं।

शेयरधारकों में विश्वासः उच्च एनपीए शेयरधारकों का विश्वास खो देता है।

उधारकर्ताओं पर प्रभावः उच्च एनपीए न केवल गंभीर उधारकर्ताओं को प्रभावित करता है बल्कि अच्छे क्रेडिट स्कोर वाले उधारकर्ताओं को भी प्रभावित करता है।

आगे का रास्ताः एनपीए की पहचान और प्रावधान पर आरबीआई के वर्तमान निर्देशों ने उधार और निवेश की वृद्धि और नए उद्यम निर्माण में वस्तुतः बाधा उत्पन्न की है क्योंकि बैंक अधिक एनपीए उत्पन्न करने के डर से नए ऋण देने से सावधान है। इस लॉग जाम से अर्थव्यवस्था का हर क्षेत्र पीड़ित है। सरकार को नुकसान हो रहा है क्योंकि उसे बैंकों के पुनर्पूंजीकरण के लिए भारी बजटीय धनराशि खर्च करनी पड़ रही है, जनता पीड़ित है क्योंकि वे विकास के लिए बैंकों के वित्त पोषण से वंचित हैं, नए निवेश और बैंकों और एफ.आई. से वित्त पोषण में कमी के कारण रोजगार पीड़ित है। यहां तक कि जिन बैंकों के लाभ के लिए एनपीए प्रावधान लाए गए हैं वे भी अपनी लाभप्रदता और शेयरधारकों के मूल्य में भारी कमी के कारण पीड़ित हैं। जाहिर है नुकसान सभी को है। इसलिए भारत की जरूरतों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए मौजूदा एनपीए मानदंडों की समीक्षा और संशोधन करने का समय आ गया है।

निम्नलिखित दो उपायों से स्थिति में काफी राहत मिल सकती हैः आम तौर पर सभी प्रकार के व्यावसायिक उद्यमों का कार्य चक्र कच्चे माल की खरीद की तारीख से बिक्री आय की प्राप्ति की तारीख तक 90 दिनों की अवधि से बहुत आगे तक फैला हुआ है। उनके अधिक बकाया को एनपीए में वर्गीकृत करने के लिए 90 दिनों के इस प्रावधान पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। यह वांछनीय है कि भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा व्यावसायिक इकाइयों की बकाया राशि के वर्गीकरण के लिए निर्धारित 90 दिनों की सीमा को बढ़ाकर 180 दिन किया जाना चाहिए ताकि वे अपने सामान्य व्यवसाय संचालन की कीमत पर अपनी ऋण–किश्तों की सेवा के लिए अपनी कार्यशील पूंजी को मोड़ने के लिए बाध्य न हों। आरबीआई ने बैंकों और कर्जदारों को उनकी अधिक बकाया राशि का समाधान करने के लिए एक खिड़की प्रदान की है जो खासतौर पर दबावग्रस्त परिसंपत्तियों के समाधान जैसे एकमुश्त निपटान और कॉर्पोरेट ऋण पुनर्गठन आदि के लिए योजना है। साथ ही डीआरटी का गठन, आकर्षक सीआरआर, लोक अदालत, कॉम्प्रोमाइज सेटेलमेंट, सरफासी एक्ट, असेट रिकंस्ट्रक्शन कंपनीज, कड़े एनपीए रिकवरी फोरम इत्यादि के द्वारा आरबीआई की एनपीए को कम करने की कोशिशों में से कुछ मुख्य कदम हैं।

आरबीआई के दिशानिर्देशों में ये बदलाव बड़ी संख्या में व्यवसायों को बीमार होने या बंद होने से रोकेंगे जिससे आर्थिक गतिविधि और रोजगार का नुकसान होगा। यह अशोध्य ऋणों के परिहार्य वर्गीकरण को और रोकेगा और बैंकों द्वारा अनुचित मुकदमेबाजी की आवश्यकता को भी समाप्त करेगा और उन्हें नुकसान से भी बचाएगा।

सत्या द्विवेदी
प्रबंधक, कैप्स जयपुर,
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया

अभिप्रेरणा

जीवन प्रबंधन

जीवन प्रबंधन :– हमने अक्सर यह सुना है कि हमें मनुष्य तन 84 लाख योनियों में भटकने के बाद मिला है और यदि मनुष्य के औसत 80 वर्ष के जीवन पर विचार करें तो हममें से कई समस्याओं, शिकायतों के साथ दिन की शुरुआत करते हैं और ऐसे ही रोते हुए दिन से सप्ताह, माह, वर्ष व पूरे जीवन को गुजार देते हैं और एक दिन इस दुनिया से विदा ले लेते हैं और वहीं कई महान हस्तियाँ होती हैं जो अपने पीछे एक इतिहास रच जाते हैं। आइए हम भी इनके जीवन से सीख लेकर जीवन प्रबंधन के गुर सीखते हैं।

सकारात्मक सोच ही सफल जीवन का मूलमंत्र वृहद: रूप से देखा जाए तो जीवन प्रेम घृणा, सुख–दुख, सफलता–असफलता, उन्नति–अवनति, मान–अपमान का समुच्चय है। हमें यह बात पक्की कर लेनी चाहिए कि जो भी होता है अच्छे के लिए ही होता है जो कि इन उदाहरणों से स्पष्ट है। यदि श्री राम को अचानक वनवास नहीं मिलता तो यह पृथ्वी राक्षस विहीन नहीं हो पाती, एक सभ्य समाज की स्थापना संभव नहीं हो पाता। वर्तमान के उदाहरणों से देखें तो एडिसन को यदि उनके प्रिंसिपल द्वारा स्कूल से नहीं निकाला जाता तो आज विज्ञान के इतने चमत्कार देखने को नहीं मिलते। यदि अमिताभ बच्चन को उस दिन रेडियो जोकी की नौकरी मिल जाती तो आज हम सदी के महानायक से परिचित नहीं हो पाते। यदि महेन्द्र सिंह धोनी और रोहित शर्मा जैसे खिलाड़ियों को उनके इच्छानुसार खेल खेलने से रोका न गया होता तो क्रिकेट के इतने रिकार्डस आज नहीं बनते। इसलिए हमेशा यह मानकर चलें कि प्रकृति के पास हमारे लिए अच्छी पूर्व योजना है। हालांकि शुरूआती असफलताएं व्यक्ति को कमजोर कर देती हैं किन्तु इन परिस्थितियों से उबरकर ही व्यकक्ति सफल हो पाता है। याद रखें जीवन कुछ और नहीं पल–प्रतिपल का ही समुच्चय है। इसलिए हर पल को हंसते हुए जीएं, जीवन स्वमेव सुखद हो जाएगा।

जीवन के सभी पहलुओं में उचित संतुलन :
व्यक्ति के जीवन के कई पहलु हैं जैसे– व्यक्तिगत जीवन, पारिवारिक जीवन, व्यावसायिक जीवन, सामाजिक जीवन, आध्यात्मिक जीवन आदि । हममें से हर एक को कहीं न कहीं दैनिक तौर पर जीवन के इन सभी रूपों को जीना पडता है, इसलिए उचित जीवन प्रबंधन तभी होगा जब हम सर्वप्रथम आत्मप्रबंधन कर आपस में समन्वयन स्थापित कर पाएंगे। प्रकृति ने हमें दिन के 24 घंटे दिए हैं, यदि हम प्रतिदिन के इस 24 घंटे में आठ गुणा तीन नियम का पालन करें तो निश्चय ही इनमें सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है जैसे– 08 घंटे अपने व्यावसायिक जीवन के लिए, 08 घंटे अपने व्यक्तिगत जीवन जैसे सोने, कसरत, ध्यान, पूजा पाठ व आत्मवलोकन के लिए, शेष 08 घंटे अपने परिजनों, मित्रों, रिश्तेदारों के लिए रखकर अपने कर्तव्य निभाएं जाएं तो संतुलित जीवनयापन किया जा सकता है। इसे कुछ इस तरह से किया जा सकता है– सुबह जल्द उठकर अपने लिए समय कसरत, योग, ध्यान, संगीत सुनने, अच्छे पुस्तक पढ़ने के लिए निकाला जाए तो इससे रोज़ एक विजेता की तरह शुरुआत होगी और सुबह से शाम तक तन और मन ताजगी और उत्साह से भरे रहेंगे। यदि हमारा तन और मन स्वस्थ नहीं होगा तो हम अपने परिवार, व्यवसाय और समाज की सही तरह से सेवा नहीं कर पाएंगे, इसीलिए कहा गया है कि दीपक स्वयं उद्दीपित होकर ही दूसरे दीपक को प्रकाशित कर सकता है। व्यक्तिगत जीवन के प्रबंधन के बाद व्यावसायिक जीवन का प्रबंधन स्वयं होने लगता है। किसी ने ठीक ही कहा है कि जो सुबह 6 से 9 को मैनेज कर लेता है, उसका 9 से शाम 6 भी अच्छे से मैनेज हो जाता है। अक्सर यह समय हमारे व्यावसायिक कार्य का समय होता है। अपने दफ्तर में निर्धारित समय से पूर्व पहुंचना और पूर्ण निष्ठा के साथ अपने कार्य को करना न केवल हमें पूर्ण संतुष्टि देता है, बल्कि हमारे संस्थान व समेकित रूप से सम्पूर्ण समाज के लिए हितकर होता है। समय पर दफ्तर आना और समय पर घर जाकर अपने परिजनों को समय देने से न केवल रिश्तों में प्रगाढ़ता आती है बल्कि सच्चे सुख का आधार ही हँसता खेलता परिवार है। आइए इस पहलू को इन उदाहरणों से समझें। कथाएँ कहती हैं कि प्रभू श्रीराम की माता कौशल्या राजरानी होने के बावजूद अपने पुत्र के लिए रसोई खुद तैयार करती थीं । विश्व के सबसे धनी व्यक्तियों में से एक वारेन बुफ़े से जब उनकी सम्पूर्ण सफलता का राज़ पूछा गया तो उन्होने बतलाया कि विवाह के 50 वर्षों के बाद भी उनके जीवन में एक भी दिन ऐसा नहीं था जिसमें वो अगर घर पर हों तो अपनी पत्नी के साथ भ्रमण पर न गए हों और अपने बच्चों और फिर पौत्रों को पढ़ाया न हो, उनके साथ समय न बिताया हो। यह उदाहरण अपने आप में सब कुछ कहता है। इसलिए जीवन के सभी पहलुओं में उचित संतुलन सफल जीवन की आधारशिला है ।

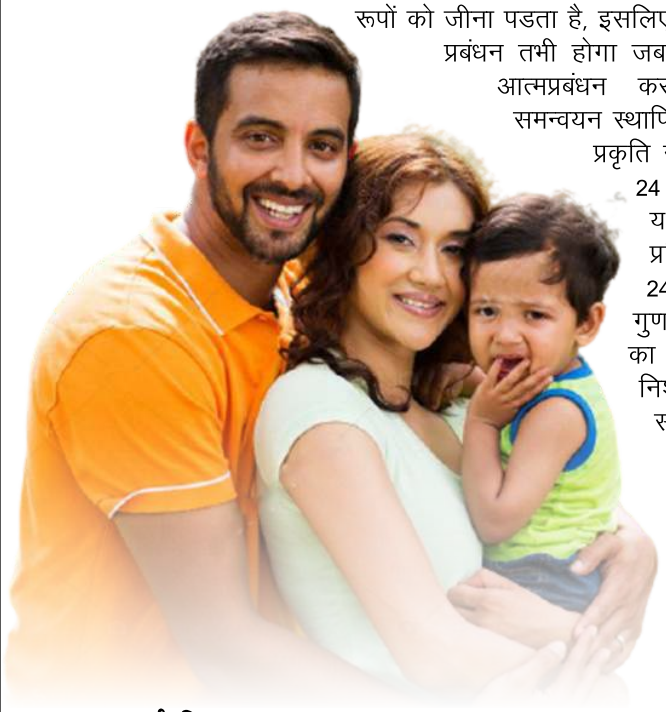

सत्यता व निष्ठापूर्वक जीवन : भगवदगीता का संदेश कि "कर्म ही पूजा है को देश के पूर्व राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम ने भी अपने शब्दों में रेखांकित किया है"If you salute your duty you need not to salute anybody but you pollute your duty you have to salute everybody" जो सब कुछ कह देता है । उक्तपंक्तियों में दर्शाया गया कर्म या कर्तव्य का अर्थ केवल व्यक्तिगगत या व्यावसायिक जीवन के लिए ही नहीं बल्कि जीवन के सभी स्वरूपों के लिए है। अपने सभी कर्तव्यों को सत्यता व पूर्ण निष्ठो से करना ही श्रेयस्कर है।

समाजहित में ही स्वहित समाहित है : व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन के बाद सामाजिक जीवन की बात करें तो हम सबका यह कर्तव्य है कि अपने समाज, अपने देश के प्रति भी उतने ही जवाबदार व जिम्मेदार रहें। " भगवदगीता में श्री कृष्ण ने परेशान अर्जुन को यह शिक्षा दी थी कि तुम वही कर्म करो, जो समाज के हित में हो, केवल व्यक्तिगत हित की भावना रखना तो पाप का मार्ग है " अगर हम गौर करें तो प्रकृति का हर कण केवल सर्वहित के लिए ही कार्यरत है, चाहे ग्रह नक्षत्र, सूर्य चंद्रमा हों या पर्वत, नदियां, ये केवल देने का ही कार्य कर रहे हैं और इसीलिए विश्व की सभी संस्कृतियों में कहीं न कहीं प्रकृति पूजा का वर्णन मिलता है। जिस भी इंसान ने समाज के

उत्थान के लिए अपनी पूर्ण निष्ठा दिखलाई है, उसकी आज पूजा की जाती है, महावीर स्वामी, गौतम बुद्ध, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी जैसे महान विभूतियों ने अपना सब कुछ परमार्थ के लिए त्याग कर जानबूझकर त्यागी का जीवन यापन किया। वर्तमान दौर की बात करें तो इस्कॉन संस्था, स्वामी नारायण संप्रदाय द्वारा स्थापित बी ए पी एस संस्था सहित रतन टाटा, अजीज प्रेम जी, अंबानी,वारेन बुफ़े, बिल गेट्स आदि द्वारा स्थानपित कई संस्थांएं उदाहरण हैं जो रंग, रूप, जाति और देश की सीमा से परे केवल बहुजन हिताय–बहुजन सुखाय के उद्देश्य, से कार्य कर रहे हैं। हमें भी इन उदाहरणों से प्रेरित होकर अपने समाज, अपने देश के विकास के लिए एक लघुत्तर से लघुत्तर लेकिन नित्य प्रयास करना ही चाहिए, क्योंकि यदि समाज सुखी व सम्पन्न होगा तो हम भी स्वमेव सुखी व सम्पन्न हो जाएंगे ।

अनुशासन ही सफ़लता का पर्याय है : जीवन के सभी पहलुओं में अनुशासन का होना ही सफ़लता का पर्याय है। अनुशासन ही सफल और असफल व्यसक्ति के जीवन में अंतर करता है। व्यक्तिगत जीवन में अनुशासन जहां हमारी अलग पहचान बनाता है वहीं अनुशासन के पालन से ही हमारा व्यक्तित्व निखरता है। कहते हैं कि एक बार महात्मा गांधी ने संध्या वंदन से पहले भूलवश भोजन कर लिया था, प्रायश्चित स्विरूप उन्होने अगले दिन भर का उपवास किया था और संकल्पन लिया कि संध्या वंदन का यह अनुशासन अब कभी नहीं टूटेगा और उन्होने आजीवन इसका पालन किया। क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले सचिन तेन्दुलकर के बारे में कथन है कि उन्हो नें अपने पूरे क्रिकेट कैरियर के दौरान लगभग 25 वर्षों तक रोज़ सुबह ठीक 6 बजे नेट्स पर प्रैक्टिस करने के लिए पहुंच जाते थे। अमिताभ बच्चन के बारे में यह कहा जाता है कि वे आज तक किसी भी शूटिंग में देरी से नहीं पहुंचे हैं। इसी तरह विश्व में अनेक व्यतक्तित्व हुए हैं जिन्हो ने आत्म अनुशासन के दम पर अपार सफलता पाई है ।

समय ही सोना है : कहते हैं कि समय ही धन है, क्योंकि समय धन और ब्रह्माण्ड की अन्य सभी वस्तुओं से ज्यादा कीमती है। सत्य् ही है जिसने समय को महत्व दिया, समय ने उसे भी महत्व दिया है। देश के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू, महात्मां गांधी, अब्राहम लिंकन आदि महापुरूषों ने लगभग अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में समय प्रबंधन को सर्वोपरि माना है। इस्कॉन संस्थान के संस्थापक श्रील प्रभुपाद प्रातः भ्रमण के दौरान चलते–चलते अपने शिष्यों से भगवदगीता का अंग्रेजी अनुवाद रिकॉर्ड करवाया करते थे ताकि वे अपने सम्पूर्ण जीवन काल में अधिकतम वैदिक ग्रन्थों का अंग्रेजी में अनुवाद कर विश्व पटल पर रख सकें। प्रसिद्ध उद्योगपति रतन टाटा एक साथ कई बोर्ड की बैठकों को निपटाया करते थे। जापान का देश प्रेम, अनुशासन व समय प्रबंधन जगत विख्यारत है। जापान में समय को इतना महत्व दिया जाता है कि वहां रेलगाड़ियों के देरी से आने का औसत 60 सेकंड से कम है। उक्त् से स्पाष्ट है कि समय प्रबंधन ही जीवन के हर क्षेत्र में सफलता की सीढ़ी है ।

उचित लक्ष्यों का चयन व प्राप्ति हेतु निरंतर प्रयास : प्रसिद्ध कथन है कि जिस प्रकार बिना पतवार के जहाज अपनी मंजिल तक नहीं पहुंच सकता वैसे ही जीवन में बिना लक्ष्य के कोई सफल नहीं हो सकता। लक्ष्य का निर्धारण केवल आर्थिक उन्नति के तौर पर नहीं बल्कि जीवन के हर पक्ष को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। हर व्यक्ति को अपने जीवन के मुख्या लक्ष्य जैसे– एक खिलाड़ी को आगामी ओलंपिक में पदक जीतने, एक व्यवसायी को साल के अंत तक अपनी कंपनी को एक निश्चीत ऊंचाई तक पहुंचाने हेतु लक्ष्य बनाकर कार्य करना चाहिए । साथ ही छःमाही, तिमाही, मासिक और फिर दैनिक आधार पर लक्ष्य निर्धारित कर उसे पूर्णनिष्ठा से प्राप्त करने हेतु प्रयास करना चाहिए। लक्ष्य का निर्धारण अपनी क्षमता व योग्यता को ध्यान में रखकर ही तैयार करने चाहिए वरना सफलता प्राप्त करने के बजाए हतोत्साहन हाथ आएगा ।

चरित्र निर्माण ही परम प्राथमिकता : कई लोगों के नज़रिये से समृद्धि को ही सफलता का पर्याय माना जाता है। अगर गौर किया जाए तो हर प्रकार की समृद्धि के पीछे उत्तम चरित्र का ही योगदान होता है, क्योंकि व्यक्ति का चरित्र ही उसकी संस्था को समृद्ध बनाती है और समृद्ध संस्थाओं से ही सबल राष्ट्र का निर्माण होता है। एक समय की बात है कि जब गांधी जी को देश के विकास के लिए पैसों की परम आवश्यकता थी, उन्होंने सभी देश वासियों से केवल एक रूपये दान करने की अपील की और 72 घंटों के भीतर 40 करोड़ का चंदा एकत्रित हो गया। सरदार पटेल के बारे में यह कहा जाता है कि जब उनका देहावसान हुआ तो उनके खाते में केवल 750 रू थे और शायद इसी कारण आज 2200 करोड़ रू की उनकी मूर्ति बनाई गई। यह सब संभव हुआ केवल उनके उत्कृष्ट चरित्र के कारण और इसीलिए तुलसीदास जी का यह कथन बिल्कुंल सटीक है कि –

परत्रिय मात समान समझ, परधन धुरी समान
इतने मे हरि ना मिले, तो तुलसीदास जमान

तुलसीदास जी की पंक्तियां शाश्वत सत्य हैं। नैतिक मूल्यों से पतन के कारण ही अर्श से फर्श तक पहुंचते हुए कई नामचीन हस्तियों, कंपनियों को देखा गया है वहीं सचिन तेंदुलकर जैसे खिलाड़ी भी आदर्श के रूप में मौजूद हैं जिन्होंने शराब व तम्बाकु के करोड़ो रूपये के विज्ञापन को ठुकराकर एक अदभुत मिसाल पेश की है। विश्व में ऐसे कई उदाहरण हैं जिन्होने अपने चरित्र के बल पर ही इतिहास रचा है।

जीवन के उक्त् सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर यदि जीवन यापन किया जाए तो निश्चय ही अपार सफलता एवं सुख के साथ जीवन यापन संभव है और यही वास्तव में जीवन का प्रबंधन है ।

सोमेन्द्र यादव
मुख्य् प्रबंधक (राजभाषा)
बैंक ऑफ बड़ौदा,
अंचल कार्यालय, जयपुर

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर के सदस्य बैंकों के संपर्क विवरण

क्र.	सदस्य बैंक का नाम एवं पता	कार्यालय प्रमुख	राजभाषा प्रभारी
1	बैंक ऑफ बड़ौदा, अंचल कार्यालय, 13, एयरपोर्ट प्लाजा, दुर्गापुरा, टोंक रोड, जयपुर	श्री महेन्द्र एस महनोत, अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक दूरभाष : 0141-2727101	श्री सोमेन्द्र यादव, मुख्य प्रबंधक दूरभाष : 0141–2727130, 8347899585
2	भारतीय रिज़र्व बैंक, रामबाग सर्किल, जयपुर	श्री अरुण कुमार सिंह, क्षेत्रीय निदेशक दूरभाष : 0141-5110331	श्री लुईस होरो, प्रबंधक दूरभाष : 0141–2577952, 9746966444
3	नाबार्ड, राष्ट्रीय कृषि विकास बैंक, 3, नेहरू प्लेस, लाल कोठी, टोंक रोड, जयपुर	श्री जयदीप श्रीवास्तव, मुख्य महाप्रबंधक, दूरभाष : 8004445060	श्री अरविन्द पारीक सहायक महाप्रबंधक : 9829972282
4	पंजाब नैशनल बैंक, अंचल कार्यालय, 2 नेहरू प्लेस, टोंक रोड, जयपुर	श्री आर.के. बाजपेयी, महाप्रबंधक दूरभाष : 0141–2743349, 7351263333	सुश्री दिशा कुमारी, राजभाषा अधिकारी दूरभाष : 0141–2747048, 9166508608
5	केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, 1-ऑर्बिट मॉल, सिविल लाइंस मेट्रो स्टेशन के पास, अजमेर रोड, जयपुर-302006	श्री पुरूशोत्तम चंद, महाप्रबंधक दूरभाष : 0141-2222944, मो.: 7073904229	श्री ललित कुमार जांगिड़, प्रबंधक, दूरभाष:0141-2224907, मो.: 8003200896,7755927955
6	आई.डी.बी.आई बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, शोरूम नं. 2 व 3 सन्नी पैराडाईज, कमल एण्ड कंपनी के पास, टोंक रोड़, जयपुर	श्री अंकुर दूबे, महाप्रबंधक एवं वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रमुख दूरभाष : 0141–4133500	कैलाश सांवरिया, सहायक महाप्रबंधक दूरभाष : 0141–4133515, 9587865531
7	सिडबी, भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक, प्रथम तल, जीवन निधि–ख, एल.आई.सी. कॉम्पलेक्स, भवानी सिंह मार्ग, अम्बेडकर सर्किल, जयपुर – 302005	अनूप पंत, महाप्रबंधक दूरभाष : 0141–2744002, 7839450814	श्री वेद मखीजा, प्रबंधक, दूरभाष: 0141-5119039 मो. 8764064618
8	बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, 13, एयरपोर्ट प्लाजा, दुर्गापुरा, टोंक रोड, जयपुर	श्री एस.के. बंसल, उप महाप्रबंधक, दूरभाष : 0141-2727150 मो. 8094007121	श्री जयपाल सिंह शेखावत, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) दूरभाष : 0141-2727191, मो. 9950393161
9	भारतीय स्टेट बैंक, प्रशासनिक कार्यालय, ए-5, नेहरू प्लेस, टोंक रोड, जयपुर	श्री अनुराग कुमार, उप–महाप्रबंधक दूरभाष : 0141–2745102, 9425393001	श्री नीरज शर्मा, प्रबंधक दूरभाष : 0141–2745102, 8527600366
10	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, किसान भवन, लाल कोठी, टोंक रोड, जयपुर	श्री ओमप्रकाश करवा, उप–महाप्रबंधक दूरभाष : 0141–412744670, 9833697256	श्रीमती सोनिया चौधरी, सहायक प्रबन्धक, दूरभाष : 0141-2744670, 9560622690
11	बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, स्टार हाऊस, बी-4,सेक्टर 2, जवाहर नगर, जयपुर	श्री वैभव आनन्द, उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख मोबाइल : 0141-2658002, 9672995824	श्री भागेश कलोरिया, प्रबंधक दूरभाष: 0141-2658046, मो. 9724691351
12	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आनंद भवन, प्रथम तल, संसार चंद्र रोड, जयपुर	श्री एम एस अख्तर, वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक दूरभाष : 0141–2371525, 7667536891	श्री पी. ए. गौड़, वरिष्ठ प्रबंधक, दूरभाष : 9828156287
13	इंडियन बैंक, अंचल कार्यालय, जेटीएम, एसएफ़ 50, जगतपुरा फ्लाईओवर के पास, मॉडल टाउन, मालवीय नगर, जयपुर	श्री जगदीश प्रसाद, अंचल प्रबंधक दूरभाष : 0141–2752216, 9558645304	श्रीमती अर्चना पुरोहित, सहायक प्रबंधक मो. 8079098787
14	यूको बैंक, अंचल कार्यालय, आर्केड इंटरनेशनल, ऑरबिट मॉल, अजमेर रोड, जयपुर	श्री प्रेम शंकर झा, उप महाप्रबंधक दूरभाष : 0141–2225617, 8877656560	डॉ सुधीर कुमार साहु, मुख्य प्रबंधक, मो. 9748006526
15	इंडियन ओवरसीज बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय एसबी-57, प्रथम तल, रिद्धि टॉवर, बापू नगर, टोंक रोड, जयपुर	श्री रंजन कुमार मिश्रा , वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक दूरभाष : 0141–4032708, 9962884626	श्रीमती रेणु सरोज, सहायक प्रबंधक दूरभाष 0141-4032940, मो. 9166118651
16	बैंक ऑफ महाराष्ट्र, अंचल कार्यालय, फोर्च्यून हाईट्स बिल्डिंग, छठा तल, अहिंसा सर्किल, सी-स्कीम, जयपुर	श्रीमती संतोष दुलड़, सहायक महाप्रबंधक (अंचल प्रमुख) दूरभाष : 0141–2379903, 9309012192	श्रीमती अन्नु शर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक दूरभाष: 9650137812
17	पंजाब एंड सिंध बैंक,आंचलिक कार्यालय, 30-31 मोहन टॉवर, प्रिंस रोड, विद्युत नगर, अजमेर रोड़, जयपुर	श्री सुनील गेरा, आंचलिक प्रबंधक दूरभाष : 0141–2358628, 9891954006	श्री महेंद्र कुमार मीणा, राजभाषा अधिकारी, दूरभाष: 7055633555, मो. 9462563161

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के राजभाषा प्रभारियों की बैठक एवं व्यक्तित्व विकास पर अभिप्रेरणा कार्यक्रम।

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर के सभी राजभाषा अधिकारियों/प्रभारियों के लिए बैठक एवं व्यक्तित्व विकास पर अभिप्रेरणा कार्यक्रम दिनांक 07.09.2021 को बैंक ऑफ बड़ौदा अंचल कार्यालय सभागार में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में राजस्थान के प्रसिद्ध मोटीवेशनल स्पीकर श्री शिखर प्रजापति ने सभी सदस्यों को विभिन्न माध्यम से प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर अंचल प्रमुख महाप्रबंधक श्री महेन्द्र सिंह महनोत, उप अंचल प्रमुख श्री आर.सी. यादव सहित बैंक नराकास जयपुर के सभी राजभाषा अधिकारीगण उपस्थित रहे।

समिति की प्रकाशन उप समिति की बैठक का आयोजन

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति जयपुर के सचिवालय, अंचल कार्यालय, जयपुर द्वारा बैंकों के दिनांक 08.12.2021 को प्रकाशन उप समिति की बैठक ऑनलाइन माध्यम से आयोजित की गई । इस बैठक में प्रस्तावित आगामी छः माही बैठक के दौरान प्रकाशित किए जाने वाली पत्रिकाओं के संबंध में विस्तृत चर्चा की गई ।

नराकास जयपुर के सदस्य बैंक

बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda

IDBI BANK

राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक नाबार्ड

भारतीय स्टेट बैंक State Bank of India हर भारतीय का बैंक THE BANKER TO EVERY INDIAN

Reserve Bank of India भारतीय रिज़र्व बैंक

बैंक ऑफ़ इंडिया Bank of India Relationships beyond banking.

इंडियन बैंक Indian Bank इलाहाबाद ALLAHABAD

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया Central Bank of India

केनरा बैंक Canara Bank सिंडिकेट Syndicate

बैंक ऑफ महाराष्ट्र Bank of Maharashtra भारत सरकार का उद्यम एक परिवार एक बैंक

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक Indian Overseas Bank आपकी प्रगति का सच्चा साथी Good people to grow with

यूको बैंक (भारत सरकार का उपक्रम) UCO BANK (A Govt. of India Undertaking) सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

सिडबी

pnb Oriental United

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया Union Bank of India आन्ध्रा Andhra कार्पोरेशन Corporation

पंजाब एण्ड सिंध बैंक (भारत सरकार का उपक्रम) Punjab & Sind Bank (A Govt. of India Undertaking) Where service is a way of life

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर

छमाही पत्रिका